



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वती जीव  
 नः ॥ अथ पारायणरुतधर्मचन्द्रोदयश्च  
 न्द्वेन्द्वनासालिख्यते ॥ देहा ॥ गनपति  
 दिनपतिगवरिपतिश्रीपतिस्करञ्जवल  
 व पुनर्नपदपंकजप्रथमजवजयश्री  
 जगद्वेश ॥ गनपतिस्तुति ॥ छय्या ॥ धर  
 तनालदुजक्रांतिजालप्रतिपालद्वद  
 मुख ॥ परतपाइजनकीसहायसुखदाय  
 हातदुख ॥ भयसिद्धिवसनवोनिधिक  
 खुधिविमलश्रुति ॥ मरुतमरुतिसद्वार  
 निसरुतिसुभिलेनकरनिगति ॥ मंडन  
 महेसकुलकेप्रगढ ॥ अथ वंडनकुमति  
 हात ॥ कविजगतजुगलकाजोरिकैमो  
 रैसीश्वंधनकरतर ॥ हरजस्तुति ॥  
 ॥ अथ रंघप्रारंभः ॥ हेमाचलपारव  
 तअननागा ॥ कैसोकवहेनूधरसना  
 गा ॥ गनवहतदेवदानवअनूपतिन  
 कोजुलसैआश्रयस्वरूप ॥ जामध्य

धर्म०

द्वितीयकायकीनि॥ चित्तहेन्यासजीत  
हमवीनतीनकोजुमनी॥ वाजेमहान  
तिनसमयप्रसक्तकेनृजन्मादा॥ रादि  
हा॥ मनुष्यनकेकल्याणकोकर्ताधर्मस  
धीरवर्तमानकलिजाविय॥ इहेवधर्म  
रीर॥ लोचनारस्वधर्महताहीकोमुन  
साज॥ सत्यवतीकेनंदुम॥ कहेआपम  
हाज॥ इहेदेव॥ धर्मजातिदे  
कोचित्तचाह॥ जिनकेसतसेअधिक  
उछाह॥ अहेजीवेसतीमहान॥ तिनइ  
हकोनृमसनिधान॥ तववहहस्यवती  
केनंद॥ धर्मधामअहआनंदकंदउत  
केचाहचित्तअतिविनिवचनउच  
रनइतवहकोन॥ इहेद्विजउत्तमहेसु  
नलेहु॥ सर्वधर्ममेनाहेसंदेह॥ मजानत  
इतउमनोगप॥ हमतमकारतअवेइह  
जोगवहाजायकारिकेपितुप्रसचित्त  
अपनेमधरज्जास॥ नमसकारकारि

हे सिरनाय। कहि है प्रस शही चित्त चाश।  
॥ ब्रह्म प्रथमी ॥ तिह समय साबरी सज  
न उवाहनि जव मंत लजानत सुचात क  
री वेद व्यास कृष्ण भाग। जिनके सुचित्त  
लिये जान रगा। ज्ञान देखित मन ही स  
माता। प्राथम सब हिका न पेजात। इक  
सौ कबडिका प्रम सुबा। वह उक्त ब्रह्म न  
ना प्रकार। सो नित सुफल फलने सुवे स  
वह कलित नदी नीर कस देसा। गिरथ प्र  
विन्न कौहन पारा। सो नित सुपर्वत हिमालं  
कारा। ७। धरा मृग समुह करिके सुजत सु  
रथान देखि नर लहति मुक्ति। गंधर्व जहज  
हासि इह ह। सुम नित्य गीत वेष्टे तस मू  
ह। जाको जव सै रिस जन कते य। जीनके  
जस भोके मध्य सेया। इक शक्ति नाम मुनि  
हे महान। जिनके सुपुत्र जानो कजान  
पारसर नामा हे प्रसीध। निति रहे जो रिक  
समृद्धि धितर हे होय सुष पूर्व जान जि

धर्मः  
२

नकोजमहात्मकस्वयान्भावर्तु  
व्यग्रासुनिरमाजबहजोविहत्तष्ट  
इहीकाजबहस्रवतीसानोव्यासा  
करिकैमनामचित्तधरिजलासस्तति  
करिप्रतिपूजनकरिताहिकविकहत्त  
जगन्चित्तकिमैनाथसासमयेस्तु  
रुमन्पितृपारास्तरजीनतिनकोप्रम  
मुकसिजुवसद्वलतिव्यासप्रदीनर्ण  
मुनिवरननेमुव्यजुमकारिजुगविद्ये  
मुजानाप्रानोमात्रप्रसीदियजगजिनको  
धर्ममहान्छन्दप्रधी॥ अथचारि  
वरनआत्मसाचरिजितजयाजोग्य  
धर्मस्त्रिचारिआरज्यासकोकर  
विलंबाआयेजुमनीसंसांसंगकंदजि  
नकोप्रतिपूजनसहितमीतिकरताडुडु  
वातवहीरीता॥१॥ करिकहपरास्तरधरि  
जलासमलजुवोआगसनतुमहिव्या  
साजेमुनिवसाजश्रेष्ठमहान्आदर

सुखासकौकरिसुजाना॥प्रतिकहतधारि  
चित्तमेंअनंद॥अलङ्कृतोअगामननुम  
हिनंद॥चैतर्फरिसीअवहेसमूह॥करता  
अङ्कवास्वरातिप्रसिद्धि॥अजतसुफेरिक्  
सलानवेसा॥प्रतिकहीअहेकासलानपे  
सवहव्यासधर्ममतिचिन्तनीना॥नवप्रह  
पगसुअतिहीकीना॥१२॥अक्तिवत्सजोले  
हकरितेममअक्तसुजाना॥पिताधर्मह  
सोममदाअवमुदिकहोवसाना॥१३॥  
अन्दप्रहेही॥ममअजअनुग्रहजो  
जेया॥तवकहतव्यासजोसुनेतेयमेमा  
नवमुनिकेकहेधर्म॥सवकियेअवतह  
सकर्मकर्म॥प्रतिजोवसिद्धउच्चाकीन  
कासिपमुनिसअसतार्गजीना॥शौचमगो  
पालअन्निवधान॥इकमुलीविमुसव  
तजानि॥असुद्विअगिअमुनीलला  
म॥सुतिलयेधर्मइनकेतमाम॥सातातप  
नामाअरुहरीता॥प्रतिजापवत्तिकम

निवृत्तिप्रतीतिः असन्नापसंभ्रमनिवृ  
त्तविचारः सोक्तिप्रवृत्तहसधर्मसामु  
त्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
ब्रह्मस्यतिकस्योत्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
तसुजोशः प्राचेतसनामामुत्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
एतधर्मवाक्यतसुदेवः सुत्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
ताकोवयानाः असवेदः अर्थकोलियो  
जातिः सातवसुधर्मसुत्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
मनुकथाधर्मसोत्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
ओत्तिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
हस्यः आचारधर्मकलिजुगहिमाश्र  
त्तिही अएक्यकोर्तलवतनाहिः सो  
आत्तिवर्तकीः अजोयः साधरतहसो  
कहोमोरिः अहकणोः अजवव्यास  
सुवः तदिसंवलितत आसधर्मसामुत्तिसंवलित  
जुपरासुप्रगटन्नेनः तवकहोव्यास  
प्रतिहैवैतः १५ ॥ अहः ॥ अवनुम  
निर्नवधर्मकोः अहः ॥ अवनुम

जगहीमैकहतहं। मुनूपत्र सुवसागर  
 ॥ छन्दमैयरी ॥ जगनसहितसवमुनी  
 महाना। प्रवगाकरोनिजधर्मसुजात  
 कल्पकल्पमैद्वय असुदृष्टिब्रह्मा  
 विसुमहेसुरसिद्धि। जिनतैश्रुतिप्रम  
 तिह्वेस। सदाचासुहधर्महमेसा। की  
 गाओरहउत्पतिहोय। करताओरवेद  
 नहिकोय। सुमरनकरनहारविधि  
 ज्ञानिनैसैहीइहधर्मसहान। सुमरन  
 मनजोहैसुअदाय। कल्पकल्पमैकर  
 तरहाश। मभयनकेसतजगमैधर्म।  
 असुनेतादापरमैकर्म। पुनिकलिज  
 गमैओरहीहोत। असेजुगजुगअ  
 तउदोत। दोहा॥ एतजुगतपन्ना  
 चानहैनेतामध्यरूपान। दापुसु  
 गपसारैकेतहै। कलिजगकेबलिह  
 न॥ छन्दमैयरी॥ मानवसुधर्मसति  
 वताश। गौतममनेसनेताकहाइ



संयत्निकतद्वापु उचार। कलिमा  
नप्राप्त करे सार। १० इदं कथं प्राप  
वापुत्रिये वि। सति जुगहि माहियाको  
जुलेषु। वदित्तरे समेति हो काले। अ  
वसुनुओत्तेता सुवाला। विजयाममध्य  
सुनिने प्रवीना दिजात भाग विनजरुवव  
न जुग कहओ ह्यपु सप्रीत विदिजा  
वंसमेव हीरेति। कलि जुग समध्य इह सु  
ने चाप वह कर लहाको लगत पाप  
सति जुग संजात किये। पाप पुन्य लग  
जात। नेत प्रादियत लंगे। हे वात विधा  
ता २० ह्यपु अत लक्षन किये। अगत  
अगि जात अहस। कलि जुग पातिक क  
मते। पाप लगत। अहसि २१। आयतत  
छित्त ही लगे। सति जुग मे जग जोय नेता  
मेदव दिन न मे। आय प्रायती होय २२  
ह्यपु रमै श्व मास मे। होत आयकी आव  
वरसे दिन कलि काल मे। लगत आय

कोदाव॥२३॥ अधरमजीसोधमको  
 मिथ्याजितसतिसेया॥ शसनजीतराजा  
 भये॥ नारिजितपतिहोय २४॥ छंदप  
 ह्री॥ थाकलूमोहकइहताजोया॥ अस  
 अगनिहोत्रसवसिपहोयो॥ गुरुदेवपू  
 ज्यवोहोतछिंजा॥ अवबहुओरकलिका  
 लचिन्ह॥ वितहीविवाहवतिताविचार  
 हैहैप्रसतिकन्याकुमाशि॥ २५॥ जुगजुग  
 हीमानजोधर्मदेया॥ तसमयजाइसोवि  
 प्रपेवि॥ करनीतताइकीनिद्वैम॥ जुगजु  
 गनसारदुजहोतओन॥ २६॥ जुगजुगन  
 मामसामर्थजोया॥ वाकीमुनीनजेक  
 हीसोइ॥ सोकहेपरासुरमुनीप्रेस॥ अत  
 ह्यपायप्राचितमुहेवि॥ कारणमुफेरि  
 करिन्विचारि॥ जातेरुहोतअधकौ  
 उतारा॥ अवबहेधर्मतिचकौजुवेस॥ अ  
 नुचितवनकरिकैकइपेस॥ तिनच्यारि  
 वरनकरिकैसजोगा॥ अवकरोश्रवन

धर्म

५

सुविभुनिमलोत्तर ७ ॥ ब्रह्म ॥ प्राणपुर  
 मत्तहस्रगाव् पृथपविवृत्तकाश्च पाप  
 नकोइहपुहामिहे कातहारहेजास्रष्ट  
 विपन्नहिताचितवतकियो धर्मथापना  
 हेतापाराकासुनिप्रितिकरमुत्तासु  
 धारीमेतस्य ॥ अन्वयस्य ॥ इत्थाविद्वके  
 धर्मवाहिन्नाचापालनाकरतताहि  
 अचाहृष्टिजोदेहजोहवातवपारा  
 मुखधर्महोकादुजएजोहत्तजतसप  
 इत्तकर्मप्रोववितारहाइ अस्ते  
 वस्तुतिथइजेविचारइत्तसेसभोजको  
 कातहाइ इहरीतप्रोतिसौकोकोइ  
 कथइजविप्रवहसिथलहेइ ३० षट्  
 कर्मकोजसेजगकहाय होप्रथकप्रथ  
 कदेहोवताय कानेप्रथमस्तानकारि  
 येमहान्प्रतिद्वितीयवीप्रसध्याविध  
 न जपत्रतीयहोमचौथोवताय ॥ आ  
 धेनवेदपंचमकहाय ॥ पूजनसुदेवव

२कर्मजाति॥ दे० और सो सज गालिये मा  
नि॥ ३१॥ दोहा॥ वैख देव पूजन अति  
था हति न को मुन साज॥ इ ह दिन प्रति  
ति दिन वट कर्म के॥ विप्र न के महाराज  
३२॥ विप्र हो हे दे ही न ले॥ इ र म पंडित हे  
दा॥ वैख देव त सु कर्म मे॥ जो क ह प्राय त  
हो श ३३॥ छन्द॥ वह अतिथि मिलत  
ति ह समय माहि॥ सो स्वर्ग दो त सं दे ह ना  
हि॥ प्रायो जु दूरि दिस ते जु को श व ह थ  
कि त्पं थ मे र हो हो श दु व वै ख देव सम  
ये सु आ ना॥ वा को अतिथ्य सु जानो  
मु जान॥ को उ प्रथ म प्राय यो आ प  
ती र॥ वा को अतिथ्य न हि ग नो धी र  
३४॥ वै सै अतीथ्य को इ ही भा य॥ फि  
र गो त्र व र ण यू हो न ता हि॥ वा को न प्र  
छिये वृ ति वे द॥ त मे ल गा टा चि त वी न  
रि वे द॥ क वि ज ग न जी व मे हे जा नि  
यो अतिथ्य सर्द सु र म श्मा नि ३५॥

शुक्लाविवसतसोऽतिथनाहि इहस  
मसलेहृतिजचितसाहि भलहोहसा  
ह्यवकताभुदेवतितरहोकेतसवसु  
एतसेवाकोउसमयपाइकरोहआइ  
जाकोऽतिथ्यजानोसनाइ ३६  
॥ चोपइ ॥ इकदतधारीविप्रसहोइ  
जायऽप्रवसंगपाडोइ अतइकज  
तोएजकोजाति येकवेदऽभासीनि  
तिमानि इहतीमूदिनप्रतिदिनसोइ  
इतहिऽप्रवसंगपाहोइ वैसदेवसम  
येकोभाही विष्णुकप्रापतिहनीजठारि  
वेखदेवकेजिमतउधारकनेवहूतप्री  
तिसोसाव इहचितमेततिराविप्रवीनि  
विष्णुकवहूरिविषर्जनकोन ३७ अ  
तोबहूतऽचारोचइदियोनहिपका  
नसुताइ उनहोउनकोकधुनदीमभ  
हनऽनऽपकरलीन बाहीमहली  
येहीरीति चंडायनवृतकोसप्रीति

तव व ह प्र ह हो य स न ले ह ॥ यो भे क धु ना  
हि सं दे ह ॥ ३ ॥ ज ती रा ज आ वे ष र वी न ॥ प्र  
थ मे ह स्त मे ज त्त क र ती न ॥ पि न पी धे नि  
दा ति हि दे ह ॥ व ह रि वा रि क र भे क रि ले ह  
नि द्या वे मे द श्जो हे य ॥ मा नु मे र तु ल्य हे  
सो श ॥ अ स व ह नी र द शो क र य ति ॥ सा ग र  
तु ल्य ता हि को जा नि ॥ वै स र्व दे व क्र म दो स  
म नो ग प ॥ वि द्यु क दू र क र न हे जोगि ॥ वि  
द्यु क दो ष न कू स नि बी र ॥ वै स र्व दे व क्र म  
क र ने वी रा ॥ ता ते ज र न स हि त्त स न ले ह वि  
द्यु क को वि द्या पु नि दे ह ॥ ३ ॥ ॥ भो व ह वि  
प्र ज ग त्त के मा हि ॥ वै स र्व दे व क्र म क रि हे न  
हि ॥ भो जन के हि त्त वै जि त्त चा हि ॥ भ द न्त  
अं त क र न न हि ता हि ॥ ता को हे त्त सु नो  
स व को ह ॥ वा इ स जू रा प्रा प ती हो श ॥ म  
स्त रा पर व स्त रा ध र धि हि ॥ भो जन क र त्त सु  
नो ते वि रा ॥ अ स द च्छि न दि स ने म र ख र भि  
भो जन क र त्त ज ग न कृ ति ता सि ॥ अ स वा

येषां प्रकारेण च। कोऽभोजनकस्तस्य  
केत। प्राग्मेकयुसंकहेनादि। वेनोजन  
एतिसकहिजादि। ४१। करतजतीकौकं  
चनदान। इत्यचारीकोनागपान। अ  
जयचोकोदेविष्णुत। सोदतीनरकत  
कोजात। ४२। चोहोइचिंडालसुकोइ  
पञ्चपिन्नधातकोहोइवेस्वदेवसमयेमे  
आइ। सोवहअतिथस्वर्गलेजाइ। ४२  
पुनिकाइजारहुजारलोत। जेवहनवीच  
लगावाइदेन। सतघडाधृतकाहोमीता  
हि। अतिथीनआसपूरिजजाइ। इहसु  
नमहस्तीमतीमहंत। नववहेहोमनिह्य  
ककहंता। ४३। कोउअतिथभस्तआस।  
जुहोइ। जापुरसंगेहतेगयोकोइताके  
जुमोहकोअंनदान। पित्रीसुरपनएव  
समाने। फिरगहनकारतहेकज्जनाइ  
इहससकिलेहुनिजचितमाहि। ४४। सत  
कारविप्रनहोअतिथकीन। अरुअ

दीनापुनःपुनःपुनः

सुंदरसमेत  
सुंदरसमेत

नह



सुभाय कुलके जु कर्म ते नही प्राय

स्वजात जो ह्यपवान नही राज

मिलत भ्रान्त असक सोय

तव राजलक्ष्मी नही होइ

क्रावात वहवीर जो मनीगे महान

फूल न ले ही ले जावृत्ति

हिका हु वृत्ति माली सुजोम

काली कता हिकी रत्ना हमे सा मति

कनू हल हे उयागि सनिक्षत्र

इह विचार पुनिलो झरत नवचोस

प्रतिपाल गजन की का झवाइ विवप

रत्नी कानू जंवेस इह वेग प्रवृत्त जा

हमे सा ४४ ॥ अथ शुद्ध कर्म ॥ अवशुद्ध

धर्म सुनिये मने न दुज एज सुख साव

अत की न इह परम धर्म दी नो वताइ क

छुकोरे अनिधा निफल जाइ ४५ ॥

देह ॥ लूणाते लमधृत क्रदधि ४६ ॥

असुद्ध सभाइ इती वसुवेचो नले

एम  
८

जय। प्रव। नही जो प्रहे वे चनो  
 है ने द। सुद्धोयता को सुने। इकमदि  
 ए इकमेव। ५१॥ इन्दवैषरी॥  
 अगम्यागोन। कत डत अहि परा  
 नोन। को उ करन ता को साश सो बह  
 अरक मै जा शक पि  
 गमन ब्राह्मणी के संग वान।  
 रन करौ

५५२॥ शति श्री पारासुरे धर्म सान्ने  
 दो दय प्रथम मयूय समाप्ता ॥१॥

ति सुगहस को। धर्म  
 चार। लोक लि जुग मै वनि सके  
 विचार। ५॥ इन्दवैषरी॥ अव  
 न कह महान। पारासुर कत सुनो महा  
 न। अट् कर मन मै रत दुज राज। ये ती  
 कर कु सु न साजा। आठ न्य  
 होश। उत मता हि कह सर्व को श  
 वनन को मध्य मजा नि। व्या

अथमवमानो दीपवत्कनकहल

व्यथातकथातकहेताय ३

मनकोसाजामहेनहीताहदुजरएज

मरतपासो जल पाजो पककोहि इच्छाहि

नवमासि ॥ अशिशुकेच्छासु

इजोएनहीदियकततासि

गच्छंगजो सोश ध्यायोदूयोउदाजिहि

हेशकवयितपंडुहोतिहिसाजवहिव्य

जकोतवदुजरएज श्रेयफहवाहेकह

प्रीति ॥ विष्णुस्नानकरोहरित

कौदेवकोसेवा हवनकरोफिरिवह

देव संवायोगकरोच्छास

जतीनहुवासा ॥ अथवाचारिविप्रकौ

वाहि दीजेमोजननविकराश

प्रजगनकविजोश

शशवाघोच्छापयेतकारिसंत ॥ मदा

ताइमेच्छंन ॥ संचितहोयताहि

न ॥ पंचजगपक्रतुदह्याकीन ॥ पंच

राम  
ए

सोकरियेतिनि।कतुदद्यासो

॥७॥सतिलदुजवेचैनहिताहि।मान

समठहराश।शेयवृत्तयेदुज

वेचकुवेचकुकावा।मषी

ताश।पातकलगेवरसदीनमाहि।सो

कदीवसपुरसहलजोश।मथवीनेवे

कोश।जाकौलगेवहरिवहपाप

हचैकरि।जानेआप।॥छन्दप्रदरी॥

पुरसपासिमारनसहाय

तमषीसजाव।धुनिहोयसीकारी

जलनहरिचोरिन्मावेजस्त

कीनूमिवाश।इहपाजपातकीसमकह

।सत्रियेनहस्तकीरीतिजोश

पनितमत्रिहीहोश।तेकहंसर्वसुत्रिये

नाइकअनकूटिवैमथमजानि

अंनपीसिवैदुतियसोश।फि

सोशत्रितियजोय।जलकौनताहिसूच

पंचमजुमतिनिदेतकोश।१

धर्मः

१०

जे हो पुत्रसकलसि करनहार

मिके छेदडावा हलतें जुमेद

सगतीठकादिसारे सजीवा असेजे

सनकरनहार निहिजमकरनजा

।सवसापनि करे १० ।

तवेतसमगावतोश १२ कडाएसिलठ

तजोविमआया नहिदीयो

आगतश पुनिवासीसानकीसा

पनिहिचौरकारेआतलगतयाय

सघातकदपानि इहलीनिप्रापलगा

आनि।बहकसीकरनहारेसतेइ

विनामन्यकोजदेशपु

वतानि।त्रियतीसजगादेऊजदाननि

सीकरनतलमोपाय

नआप १४ इकफासिदेनवारोवताइ

आरमच्छिघातककहाइ

दिहिंसकवमानि असगासस

नरयतजानि।करकसीकर्सन

इह प्रथम पातकी समस्त कृपा ॥ इति  
विप्रधर्मो दीदा ॥ नरो द्वे वेती कत  
ओर दुदेवा ॥ अन्त आदि दे जगन क  
कार सवन की सेवा ॥ एवै श्रम सड हित  
येती बीरा डस दोश ॥ सिल्य कर मह  
करो न लें सब को श्र ॥ ७ ॥ छ  
॥ सड होथ सो न क म जी म  
सेव क व कृत ही की न  
शि ॥ परत न क मे लो ॥ देश ॥ द  
धर्म महान ॥ इह स जात न क  
नि ॥ जन्म भरन को सो च क जो  
सुद लो होश ॥ सो अब क ज स  
मानत मुह सि पुर स म ति मान ॥ १ ॥  
सो च ते मु कार जा जानि ले  
श ॥ दस वे दी न दु ज रा ज की  
होश ॥ २ ॥ नरो द्वे वेती कत  
स व द्या ति ॥ सु ड ॥ इ ॥ इ ॥ क मा स मे  
मानि ॥ २ ॥ ७ ॥ प दा स कर त जो

० जोश। मत को स मुझा इ होश तव को व  
सान्देव नरी। का निम्न मि परि सि मुद्दे हे  
जस रा प्रानिक हो सो च जात क व या नि द  
श दिव स मा न सु दु ज स र जा ति। च नी ज  
श द शै दिन सु मा इ। स वै स्य ये क प य  
मे क हा म। पु नि ए हि सु ड की री ति जो यि इ  
क मा स जा इ त व सु इ हो श। दु ज रा ज न्प्र मि  
हे त्री स दै स। व ली स व्दे व को हो वे स। इ  
क दिव स मा सिक वि ज रा न जा श। भा ति ज  
स द ता हो त ता हि। के व ल स वे द व क्त व  
या नि। दिन त्र ती य सु द्ता मि स्ने आ ति।  
नि र्ग ण सु वि भ को इ ह वि वा र। द स दिव स्ये  
म व ह सु भ ग सा। २२। जि हि ज न्म क र्म प  
हि न्द वि जा नि। म स स च्छि उ या पू न र हि  
त मा नि। व ह ना व धा रिका वि भ हो श। द श  
दिव न ता इ स क्त क स जो श। व करी ज रा ज  
स हि मी व ता श। दु ज नी न वी त प्र मु ता क ह  
श इ ह हो त सु द्द श ए नि मा हि हे ति ज

ए  
१

प्रमा दे  
सुनीरादशदिवसमाहिहेसुदधीवार३॥

दिउसतकजाकुलमाहि

होमजगजोशदसदिनतलक  
होशपीडीन्याहितलकअनुमा

लेजाखदिनसोचप्रापतीतेजासदृष

रासतमपुरसीदिनत्रियमाधि  
गणकहीसवसाधि



पुनः जीवमैतानि यो पुन्यपात्रवहनात् २७  
प्रीतीश्रीश्रीगोत्रके। सज्जनशार्दमनोग्य  
भोजनतनयसुभावते हेकएइवेजोगपर २८  
॥ छन्दप्रद्री ॥ जलविन्दविनकसि  
लोकोश। हतजवोःशगनमेद्वधहोश  
जववाल्ककभेतस्यस्यजानि। इनस्नान  
सन्नहीसोचजाति। वसन्नइएतिहोवती  
तापश्चात्सगीजोमहारीति। निवतीना  
तिमैपुनवीर। अनहोइसुधताककुधीरके  
उमहोपुरसमादेसजाइ। इकवारसवीचि  
नहिदुसीताहि। वस्नसहेतश्रवतानकी  
न। तवहोइसुधतासुनिप्रवीन। ३१ पुनि  
मृतकहोइदेसात्रजात। अपनेजोगोत्र  
केपुनीवात। बहतीनएतिवाश्रहारेन  
जिहएतिदिवसकोसोचन्नेन।  
आगमनकुवोवाल्कके।  
नेतहिकाल। जिहिसं

एम

१२

श। जल क्रीया ताइकी नही होइ।  
चकछु उपजंत नाहि। कै  
यपहि साहि।

जप नही सो च जानि। सुगिले  
को विधान। उजवो सास रती जु होइ।  
सद्वि सबी संके को कहते सा  
हणी कहत नाम। निषदइ ये।  
जलाम। को जवर सो जमे मना ठानि।  
निरति दिवस को सो च जानि। उके पात  
सुहेग योग वर्तीय। श्वीग योग वर्तय  
। जित ना जु मास को गर्व जानि

। डिहि प्रावनाइ  
नाश। षट्पंचम ही नागर्तजा  
। उपरंति  
दस दिवस ताहि को

सोच जानि ॥ अपर हरति समय

होय प्रहसति जीव जन्म को श

गोत्र मा कद स दिव स जानि ॥ ५

सम दिव स हीय कहु जन्म की

नि ॥ जीव जन्मो मृत क जान क सतीया

मात सोच द स दिव स हीया

तानि होया ॥ अथवा जु मृतु को ल हत को

शानि पा जो द स जो क ज पा हि ॥ तो प्रथम

शो सव हि म त ता श ॥ जीव त ल क स र न हि

उ दो हे ता ॥ त व त ल क प्रथम ही दिन उ दो

ना ॥ जीव जन्म न स त पी छे स जो श ॥ ह ज द र

स फ र ति य क हो श ॥

ना ॥ त व प्रथम दिव स ही मह रा को न ॥ २

को उ न्म र ध ए ति त क म ल हो श ॥

स च पूर्व दि न ग ह न हो श ॥ ४

पी छे स जानि मान हे जीव जन्म जा

ता वी च सोच की कहु को श ॥ दिन फो

ए

१२

महन होश ३३ ॥ दोहा ॥

३४ ॥ दोहा ॥ पीछे उवाकाल के लो

ना तौ वाकौ फिख्खानि दे

परदीन गवाह प्रवीना ३५ ॥ छन्द वैद्यी

वालक जन्म लियो चित नीना ॥ ना को

दंत आगमन कीन ॥ पीछे बूडा कर्म क

राज्ञा को देखना वदता ॥ सुंदन फेरि

वालक को होश ॥ बूडा कर्म के हेसव को

ज्ञा ॥ अग्नि शह जिह के यो महान ॥ नीन

एतिके सुतिक जानि ॥ ३६ ॥ विशरिदंत

वालक मरि जाश ॥ बूडा कर्म कियो नहि

ताहि ॥ येक दिन स आरु जनी जोश ॥ ता

को सोचइ तो हि होय ॥ जाको होइ न जाप

प्रवीन ॥ सघ सोचकी करिये रीत ॥ या उप

रांति मानहत होय ॥ दूषणत्री को हत

क जोश ॥ गर्भ माहि वालक मरि जाय

रूपदित्तस्तकजा नैतायाः श्री

लियोतिहिनात्वा निष्कानि

ह्वायाभे संकनत्पावोकोशः स्तकदर्

ततश्चित्तहोशः ७ ॥ इन्द्रदेवरी ॥

कर्मकंतिकोहोशपीक्षेजहासगाइजा

पहलीकसहोइसतिवान् एक

सोत्रसुजानाहोइसगाइकन्याताश

नाव्याहपहलीमरिजाशतोजानोदो

शुक्लजोशतीनदिवसको

शः ॥ अरुवाहीजोमरिजो हैवाम् ॥

कसकराकेधामकेरिपिता

नासिः ॥ सैसमकिलेकुसतमाहि

घरमेइसतचारीविष्णुः ॥ अति

कोहमेसकोउप्रसस्तगीचीन

नसोमिलनपरसकुकीनतोव

सचारीकोजोशः ॥ सोचप्रापती

होशः ३८ ॥ दोहा ॥ मिलिवेते

ते ॥ वासएदसतहोशः रहेनिरंतर

इति

ॐ ॥ शुद्धप्रवृत्ति ॥ सिल  
ककहेकोश ॥ अलक्ष्मीयकांडुर्क

नहेवेदा ४१/६  
हाश

शा नहे

दासोश वत्ता बड़ांगको भले होश ॥४२॥

हजत्त सौच सबको जुआश ॥

सौचदमदिव संतक जाइ जोकर तरहे

पितुपारु नरि। पुनिलगत सौचताको

जकर। जोपर सबान संकर कहा ॥

जुविप्ररतिमिलि सुताश चितलोत

धके प्रवीता बहवरन संक्रको परसर्क

ता। जोविषयमाहि आसक होश। पि

दसंग करेकोश। जिन ज्ञानको विप्रको

हदुनाश मोदी सुजनिमे परे जाइ सधर

कपाइ बुज दोसलीत ॥ मोरहि प्रकार सो

नही चीता। पाहेत जतन सब करेला गि

अदुष्टसंगको करेसाग ॥४३॥ सिद्ध ॥

तंक जातक सुद्धता ॥ प्रवाह मिलत जि

नि। म्मतक म्मतकते सुद्धता। मुकरा

माति ॥४४॥ देहा ॥ गुरुकाके लघु

ता। लघुकारिके गुरुनाहि सपरसते

कलंगे ॥ आनगोत्रकेसाहि ॥४५॥ छन

पदरी ॥ परगोत्र साहिअ है प्रवीना वह अ  
 त्रिउ० परासकीता ॥ अरु पंचगव्य  
 ने सहित प्रीता ॥ पुनिष वित्र है शहरी ति ॥  
 विवाह ककुम घहोश ॥ तिहि वीचि म  
 स्तक सुजोश ॥ संकल्प पूर्व जो कसे  
 आति ॥ वह अन्न जो ज्ञानो सुजा नि  
 निमनु महाना ॥ अवस  
 ओर जिपके विधान ॥ दिन ये कवी स  
 इस साहि ॥ तिह जन्म मरन स्तक सुज  
 इदस दिन न मां म कुव व्याह क जि ॥ तिह  
 म मरन स्तक सुसाज ॥ अन्न वं धता रि  
 इह विचार ॥ ता दिन न साहि न हि दो स  
 साग ॥ प्रवस न्तर अर्धकी सुग ति ची न  
 स्रुवा है प्रवीना ॥ ४६ ॥ इदस दिन  
 क कु ओर हो ज क कु जन्म मरन  
 सुजोश ॥ त वत ल क विम न हि स  
 अवत ल क दो स न ही हो न पूर क  
 समै रै न र ज द र स पा हि ॥ अथ बा म



रतकडुमरवन्माशतवपूर्वधोम  
वेडा। जिनरेप्रकासनहिमा नंदेडा  
तसेचमैजनावाहिनरसइमान  
कहाशाकंऊजनामाहिजोमरनहोइ  
नहीसौचसुइकरतासुहोइ। धरमा  
चवासाएचोहेशाकिरन्कोरसौचआव  
नतकोशागेप्रथमसौचतोइहजानि। इह  
वेतधर्मवत्तावधानि। ४७। असेहजात  
कतेतुथी। अतकअतकतेहोइ। कहतसु  
धताजानकविइहजानतसवको  
येहाअतकहनेदतनेमकी। करेत  
इ। आरतप्रगिअहिनगिसकी।  
जधेकाहि। ४८। ए। अतवेयरी। तापि  
पूछदुजरज। वहीकहसोकियेकाज।  
विजतकरिकेकहोववाति। करिसक  
अइहेजानि। ४९। अतिकामइजुपात  
लेश। अवतिलताइमिवावेसेइ। अ  
तकरियेअसनान। ओरआचमन

कजाता जवपवित्रता प्राप्ति होश हो इ विप्र  
 सो सुन इ सोश। कवरन गउ करे दु अ ए न। दु  
 गनु वत्री दे इ कजाता। विस्पदान तिग नौ देता  
 श। सुउ चोग नौ करे सुचाश। आक्रम से पौ वेदु  
 जगाता। व्यास वरन कध हेजाता। ब्रह्मरानि  
 मत वंदिक टिवारा। हेत गउ जो धरे म मारि वा  
 संगाम मरन हे कौ श। ये करे नित्य हिस्त क  
 होश। प०। दोय प्रकार पूर स जो होश। सरल मं  
 डल वेधत सोश। परिश ट जो ग हि रति ता हि स  
 न मुख मरत जुध के भाहि। मुक्ति म हान दु  
 नर प्राता। रवि मंडल को विध रजाता। धारन क  
 र ज दे वि स न्मा स। जो हि य ने दु ज धरे कुला स य  
 मै क छु न जानौ ने वा। स्थान चलित हे सर जे  
 वा। मो मंडल ने वे धरे सोश। पर वरु ने प्रापति  
 होश। जहां जहां रत मै ब हवी रा। शत्रु न करिके  
 घिस्यो सीरा। सब सो जुध करत मरिजाता। वि  
 अक्षय लोक को पाता। काहिर ता का जात  
 हा कहत जो वेता। प०। ॥ ॥

पद्मरी ॥ एतन्माहि विजे जो लहे को शत वरा  
 जल चोला न हो जा नर मरत जु धर्मो चित था  
 शान्देव का नामा चरे ताहि ॥ इह देह छिन विधु  
 स जो श करि मरत जु धर्म चितान को श ॥ पर संत  
 न हेत जे विरसाज ॥ सरवन्न फोज जे गइ ज्ञा जि  
 तव जे लै सवु सत मुष्प वीर ॥ जो मरे पै उ सत वारि  
 धीर जे तिक दस जे चत को श ॥ फजः स्वमे धज  
 गिता हि हो श ॥ प ३ ॥ जाके प्राचीर मे लगत वानि म  
 ससा गि मुद गार न छे द प्रात ॥ पुनिलो हल पटला  
 ठी ल गांत ॥ हे छिन्नि निव रते मे परांत ॥ तिह देव क  
 म क करि हे सरा सि ॥ ना सर संत क्रिये चाह ॥ प ७  
 एतन्माहि होत हत सर वीर ॥ धर मे ष डत जे धरै  
 धीर ॥ अप छर सहस्र पुत्री सुनाग ॥ मगर संत मे  
 र करि सा नु एग ॥ लाग्यो ललाटा विचि धावता  
 दि ॥ चलि ह धि धार मुष माहि न्ना श ॥ बहर क्त  
 नाहि जा नौ सको श ॥ बहन्ना मृत पान को दुःख  
 होय ॥ संता म न गप के धिये वीर ॥ विधि उक्त  
 हाय हे स धीर ॥ प ८ ॥ म ह मृत के विप्र नै वि

ए  
 ९

प्रलेश जवचलत नर्मसममयां न लेहितिन  
प्रेडप्रेडपरसुनौ जानि ॥ फलजगप्रापतिहो  
तन्मानी ॥ इहवचनजानि मुनिकौ सुवेसा ॥  
कविजगनभगतहितकियोमेसा ॥ १५ ॥ औ  
नहिगोत्रकौ जानिकौ श ॥ कछुनाहिवहीस  
नसंधहोश ॥ असेजेमत्तकंदुजएजजाइ  
समसातनर्मिलेजाइताश ॥ इहविप्रिकद  
हतिहकरैकोश ॥ पुनिप्राणायामतैसुद्धहोइ  
द्व ॥ सुनकर्मकरनवारो नदेव ॥ तिनको  
तमछुहेअसुननेवा ॥ जलकीयेस्तानहे  
जातसुझाइहअमतिमाहिकहिवचनउछ  
द ॥ वहमत्तकसुडकीकडुवात ॥ समसा  
तनर्मिदुजसंगजात ॥ तिनपानविप्रवह  
रैनतीन ॥ परयंतसुद्धतहिहेप्रवीनाह ॥  
पुनिकरैविप्रसुतिइहेरीता ॥ किरितीनरा  
तिजेजायवीति ॥ सोसरितसुधुमुनिकहा  
शकरिहैसनानदुजजहाजाश ॥ सतमरा  
यामध्यतपानकीन ॥ तवसुद्धहोइजानोप्र

वीन॥६३॥ करि दह दह क कडु ही सनाश

करन सनाश जल पास आनू तिनको नवि  
प्रहे लम तनेन॥ वला लुधर्म के कहेवेन

पाते जो नत क सड हि मुजान॥ हुजर जपर

सही दह ठान॥ क डु मर क स डु तै लवे को

जाते हर्य दस तै लुछ हो श॥ ६५॥ इति श्री

पाशाकर्ण धर्म सा ख्ये धर्म चं ड्रे दया इती

यम दूख सम ता॥ २५ द्ये हा॥ अति सने

इ अति मानते॥ अति हि क्रोध ते वानि॥ जे

अग मति यहे जगत्॥ तिन सो पाप हि ठानि॥

करत ओ चरन विषे को॥ का

। मरन पर पति पाइ जय॥ ताकी गति नहि

होइ॥ २॥ अन्वै दरी॥ विद्या मूत्र स्रष्टि

न॥ परन अंधन कप हि वान॥ सा

सवर सति ह माहि॥ बडोर हसन र संघे

नाहि॥ आत मधाती पुरस क हाइ॥ ताके हेत

छले जाय॥ अगति चित्त के लोरो ताहि॥

षट्म वया प्रजुक्त जिय जाति॥ अ

नकोतसवधानि। नहरफासिवाकरिमरि  
ससतरघातकरोनिजकाश। असेमनिलनेहे  
जगमाहि। सपरसजेमकनवहनासि। न  
घाचारि। अमनिदेसोशकांसिहरोमारेल  
हेशाततव्यध्वस्तकरिनिजकाशतवहे  
वहेसुधतापाश। अघउत्तरनकीरीतसने  
ना। योपाएसुरकेनिजवेना। अ। कथहान  
जोतीयकरेय। नाकोपतिरतिद्यननदेया।  
घोरबालहसाकोपाघ। वाकोलगतकर्तो  
हे। आपा। यातेप्रितसहितरतिदे। अ। प्रामेक  
संदेअ। ७। रि। सुसनालकरितियाक  
गय। प्रतिकेयासतहिबेहजाय। मेरेधरेबह  
मजाहा। पिधैवामजमवहधारि।  
धवाहोइरहैपतिहीना। भरतातीयनरदि  
रकीना। घोठीतीयानहिजोहोशामापदेश  
हजानकोश। जोवनवरतमानहैजाअम  
त करेचितवीबा। सोवहपुरसजन  
लोसाता। सीरियाजूरामहेजवघात। अ

नमस्तौ विधवा होश याते समुमि किजी  
योको द्र ए देहा माधि जुक्त असदादी  
म्रावंहे न्मातिचीन असेपतिको जे तिया  
मानक वृत्त हि कीन १० होय वृक्करी मारत  
जव ताको इह निधार जन्म स्फुरी को मि  
ले जाको वारो वार ११ चौपड संग कवारी  
लोक को इ प्री फू व्याहता हि सो होइ मर्या  
विष्टेति नको उत मान दीजे न ही पिंड को इ  
न जल की क्रिया न करनु सार कल्यांतरव  
ह नर कम मार १२ चन्द्र पदरी कडु उडो  
मोन ते वीज को इ अस अति घेत मेष डतो  
को इ उत पन नयो बह वीजता हि ति प्रज्यो  
सता हि कायेत मा वि बह धनी वाह को नयो  
विस कष्ट वीज धनी चाह न लेस १३ परदा  
ह मा उत पन नैस होइ ता पुत्र कडोत फरी  
क दोय धेक कुंड लो र गोल कवता इ पति  
जीवंत जार को गर्भ लाइ उत पन न जाये जी  
न द गो ह जि हि क हत कुंड ना हि न संदेह धा

मया आरकोर है शर्मा गो ल क क नाम सुत  
क है सर्व ॥ १२ ॥ जो निज विवा इता हो इती या ज  
त प त ता हि मे स त स ही या ॥ इ क क ह वा त स  
म मा इ तो शि ॥ ओ री सि हि पु त्र ति हि ना म हो इ  
नि ज ति या मा ह वै वी ज न्मा न ॥ हे त्र ज हि ता  
हि कौ त म जा नि ॥ जो नि यो गी द स द त क हं त  
इ इ तं पु त्रे का म ति म हं त ॥ हे कें म स न पि तु मा  
न ही न ॥ ता को सु द त क हि ये प्र वी न ॥ १३ ॥ इ क  
पर वी ति हो तं हो ॥ इ क पर वी ता जा नि ॥ आ च क  
इ ता सर्व मे ॥ जा त न र क म न मा नि ॥ १४ ॥ इ र  
ति हो ट सं जो ग जा नि ॥ व ड न्हा त स ता ल धु  
क रै पा नि ॥ वा कौ पर वी ती क है सो श ॥ पर वी ता  
भा ता ब डो हो श ॥ पर वी ती वृ त्त व ह क क धू क  
र श ॥ पर वी ता ता के व ह व ता श ॥ इ ता क हो इ  
क न्या म हा न ॥ सो कर त क थ वृ त्त व हि क जा  
न ॥ पु नि ह व न् क र न हा रो क हा यि ॥ अ न्दा य न  
वृ त्त व ह क रै चा इ ॥ १५ ॥ अ से वि वा ह क रि स  
हित प्री ति ॥ पर वी ती वा की इ हे री ति ॥ भा र जा



धर्मः समेतमदमासजोश॥ नियकरैसागकवसकहोश  
२० ॥ इवचनपरसकहिसमानि॥ कविजगनचित  
मैलेकुजानि॥ जोपसगोनकीतिमाहोश॥ तामुवि  
वाहकरिलेतकोश॥ परवासुयेककीहोयती  
य॥ तामुविवाहकरिलेसहिय॥ वाकोसुत्यागफि  
रकोउध॥ अतिकरैकछिवृत्तहोयसकध॥ एक  
जातनेतजोप्रगटहोय॥ अतवारनचारविधि  
तिहैजोश॥ जोकरतओरजोरोधनाहियेस  
मिलिलेऊजविचितमाश॥ २० ॥ एकसातओ  
रानिजतियाजानि॥ परनारिताहिकेपुत्रमानि  
रणानिहोतसंजोगमाहि॥ इनकोनदेसककु  
अगतनाहि॥ अनिश्रुगिहोततपदानकोशभा  
एकतिष्टकेहातहोश॥ ५ ॥ सश्राईमाटकोकात  
कोश॥ कन्याविसुपणिसगटहोश॥ समयेविवा  
हपुनिहोसकोका॥ राजवतीहैगइवहेजात  
उजराजकाजवहकरैसोहि॥ वाकोनिधानतु  
सकहेसोहि॥ फिरस्तानवाहिकन्याकरहिप  
निवस्यओरदीजेसजाश॥ फिरिकरैविप्रज

आवेदो हे सुद कन्यका इहि भेदा पाही ज होइव  
वताशु मैथन सु प्रापती प्रथम पाहि प्रतिभइ  
पतिकौ न आनि वि स्या समान वह तिया मानि ॥२  
वरको स मिल कुल ॥ अस सुभाशु जा करिक द चि  
उसितन काशु वा मेन मंत्रको कछु हेत

हत कन्या सचेत् ॥ २ ॥ वर कुव जा वा वनू षंड होइ  
दादग ही सव् करि वै न जोशु नर जन्म कां व-शु सव  
धिर मानि ॥ अस होइ मूक मन लेऊ मानि ॥ जनै ज  
व जिहि परस होइ करि है कनिष्ट न हि दोस कोइ ॥  
कडंतोश ॥ २ ॥ वैषरी ॥ अथवा अष्टि हो

यो पीव ॥ अत कहोइ वानिक स्यो जीव ॥ कीतो  
सी होश ॥ अथवा की लव कहत सवकोशु रोग न  
रित न हे गयो छीना ॥ अथवा वडे प्रापती न कीत  
पति पति मै होश ॥ पति कु जो करि दोसन  
२५ पतिके जीवत जोतीया ॥ अत उपास करि वा  
पतिकी उमरे छिन हो ॥ आपन रक मै जाशु ॥ २

वर्तही करत वरत उपचारा ॥ अत फल  
कौण चिस दन हो ॥ नारी नरक मै मारा ॥ ३० ॥ पछरी ॥

धर्मः  
२१

पतिमस्वापाद्येति याकोशं चतव  
तहोशं हेमरनसंमैजोस्वर्गजायि जिमिब्र  
मैमिलत-आइ सुतिकोठतीन साठासधीर  
वविचिइत्तनेंशरीर सोतीतेवरसपायंतजोइ  
चिहिस्वर्गवासप्रापतिमुहोइ पतिसंगदग्धजो  
तिवाहोइ ताहेतमुक्तिजातौसहीथ ३१ जिम  
प्रसव्यात्मगाहीसजानि विलतैतिकासी  
करतपान ॥ ससैउधारभारताकीन ॥ पतिकु  
नमुनियेप्रवीन बहस्वर्गवासकरहेहमेस ॥ आ  
नंदप्रसितिनहियेस ॥ ३२ ॥ नरकुवजवावनूषंज  
जानि ॥ असहककुष्टरोगादिमानि ॥ उन्नमन-  
धमीनतीजसाहि ॥ जेअर्धविभागीकनूनाइ  
विधवाजहोइकत्यानिदोस ॥ वरजितसोहोइभर  
नारजोस ॥ जाकोडवासपितुगेहमानि ॥ नज्यामुजु  
कमनलकुमानि ॥ ३४ ॥ इतिश्रीपारासुरेधर्मस  
लोधर्मचंद्रोदयत्रतीथमदृवसमासाः ३ ॥  
॥ दोहा ॥ स्वानजं वृत्तकेकज ॥ इत्योजातकुजराज  
फिरिवाकीहैसुहता ॥ कजसकलसुभसाज ॥ १ ॥

॥ छन्दप्रहरी ॥ कनस्तानविप्रपतिकरे-आ  
 तहोइवेदमातासुजाया ॥ रहकरैरितिजोविप्रकोइ ॥  
 ततकालविप्रवहशुद्धहोश ॥ गोश्रमाधोयजलनेम  
 हाना ॥ वातेजसिद्धकीजेसनात ॥ महानदीसमागम  
 लानकीना ॥ गयवासमुन्दरसनप्रवीना ॥ रहकरै  
 विप्राचितकीयेवाश ॥ दुजरजसुद्धतासिगुपाश ॥  
 न्यतनिपुनवेदविद्याममारा ॥ डसिगयोस्वानदुजति  
 हिवारा ॥ वहरेमउद्व-असनातकीना ॥ द्यतकीयेप  
 नसुद्धहैप्रवीना ॥ सवतीकविप्रकीकडुधात ॥ जेस  
 नआयवाकौजघात ॥ करिहैप्रमानदुजरजभरि  
 वहरुपादृष्टिदेवेजसुरी ॥ तववहपविन्नततकाल  
 होश ॥ यामैनसंकमानोतकोश ॥ कऊस्वानव्याध ॥  
 हिडस्योजानि ॥ तनकीयोविदीरननवमानिव  
 हजलप्रखालिकेसुद्धहोश ॥ उपदूलनअतिक  
 श ॥ ३ ॥ कऊस्वानविप्रकोडस्योकाश ॥ गिदुड ॥  
 छकरिकेसभाया ॥ पनिगहनक्षत्रजवउदैहो ॥  
 ॥ दरसनसताइकेकरैसोश ॥ कविजगनकहत्त ॥  
 गविचजानि ॥ वाकीपविन्नतासीधुमानि ॥ दुजको

10  
2

रत्नमेव हि होहि। इतिगद्योस्वानजिहिरहत्सोइपरि  
 क्तमहाद्वयकीकरेपरि। उजकोस्वानपुनिकोउ  
 लरा। नवहोइसखवहसिष्टजान। कविकहतचितमेले  
 कुमानि। ४। अंडालमुजुचिकरिके। कऊवासुरभीतेहे  
 इवाइसकेहाथसु। इतकहुवोजोकोपि। ५। इत्तवे  
 इर। अग्निहोत्रजोविप्रकराइ। सोउजफेरभक्तकहेजा  
 श। विसतैवाकरि। आनमजानि। ताकीकऊसतौइहवा  
 ता। वाहीविप्रकोविप्रमहान। करेदाहसोमुनसजानया  
 लोबगरिहेताकेसाहि। मंत्रताहिकोआवतताहि। वा  
 कोसपरसकरेसजान। लेकरिचिलेभूमिसमसांन। अ  
 ग्निदाहताहिकीकीत। वाकोपिंडयानपिरदीन। विप्रवि  
 प्रकेवचनमहात। भाजापतिधुतकरेसजान। करिके  
 इहआस्थपुनिलेज। उग्रमामफिरिधोवैतेऊति  
 उघरकीआनिसोताहि। पुनिवहदग्धकरेचितचाह  
 प्रथकप्रथकजेमंत्रप्रवीन। पिरिताकोउचारनकी  
 न। अग्निहोत्रकरिकेकोजानि। जाउजकोमतहोइ  
 महान। देवजोग्यतेउजपरदेस। हेहसागजो। कियोकवे। ए  
 म। वर्तमान। अग्निजिहोह। हेरिसउत्तम। जोसुनिलेह। २

॥ त्रिंशत्कारिक उच्यते ॥ आनि होत्रको मति  
 ॥ प्रवत करै जाको चित्त चाङ्ग ॥ आस चर्म रग देऊ  
 ने करि उभस नो कव काहि ॥ ताको कहन परस  
 आकार ॥ इत्येन प्रजासती न आस सावि ॥ जानौ वह  
 उडकी गांवि ॥ निवालि सधापे उत संग ॥  
 रैक उतके संग ॥ इक सथ करै जु जन है साथ ॥  
 करै आगुन हाथ ॥ सो वक्षस थल माहि भाषि  
 टमै सिन करि भाषि ॥ वृषणा कने अष्ट धरिले जाइ  
 द्वी निकट पंच मुनिले जा ॥ सताइ सधरि उरुत जी ॥  
 कै ॥ जंघा जानु वी सथित बीका ॥ चरन आगुरी धरि ॥  
 पत्र श्रेयित करि तिहि पास ॥ सिवा सिस्न ॥  
 टिक आरणी रासि ॥ कादह नै में ज ऊस नाथि ॥ स्त्री ॥  
 श्रवा वाम करि माहि ॥ प्रोरक ऊ कनन की ठाहि  
 लक्ष्म करिये तिहि वारा ॥ मूसल धरिये पीठ मसार  
 क्षस थल पासाण धरे डी ॥ तं वुतु लिलि ल मुख मामध  
 रेड्य ॥ पात्र प्रो हणी करन धराइ ॥ आडि स्थाने त्रन कै  
 हि ॥ घृत पातर आडि स्थानाम ॥ कर्तनेत्र मुख ना  
 ठाम ॥ केचन कनक स उत नै उाहि ॥ असेव ताक

धर्म  
२३

स्वो विचार। अगति होना समा सब लेश परववगा  
तमैति थिकरि दैश। इह मानी सुलोक सिधा सिधत  
आडत हवत न मे डारि। ७। पुत्र भात निड पुस वके  
इ वास मये न हि हज होश। जानि सधर्म रि निज  
तिय ता श्र बाको दग्ध कर चित चाह। आडत देहै  
सास्त्र विचार। जे सै दहन कर्म विस्तार होश विवेकी  
नित मुय दाइ। उन को इ इत त प्ये ता श्र ८। असी  
विधि जो करि है कोश। वस लोक की प्रापति होश  
हनि हचे करि जिय मे जानि। जो डज असे करे ववा  
न प्रापति होइ परम गति ताहि। यो मे कछु संकहे ना  
हि। अपनी विधि सै बोधित होश। और प्रकार को  
जो कोश। आयु वशी न होइ ति हवारा। निस चै पडि  
हे नरक मारा। ९। इति श्री पाण्डुरे धर्म सा लोच  
न चन्द्रोदय छन्द वन्दना सा श्रुतु धर्म पूव लमा न  
४॥ श्रेह ॥ या ज परति मुकहत हो। हसा को उधारा।  
लोक न के कल्पानहिता। प्रथम अर्थ सुव सारा।  
॥ छन्द वैवरी ॥ रक्त चुंच वा सार सहस। चिकवा  
कवी कुर क वं न। मेव मयूर जीव भा जानि। इनके

धातककहोवधान॥ अहो रत्रीव तते सुहो श्रवण  
 लासुकटी डैठी जोइ ॥ प्राडी नाम कवृत्तर  
 भारत जे कर दोर ॥ इह विधि सुनित्ति जे सब कोइ  
 भोज्य वृत्तते सुहो श्र ॥ कागक मेडी सारस भासती  
 तर मै नावत कविलास ॥ इनको हतन हारे जगजाहि  
 है संधा जिन मै चित चाह ॥ प्राणयाम करै जल वैठिया  
 ते सुहो इति जे पेठि ॥ ३ ॥ सिकरा सिखी गीध औरता  
 ह ॥ भास उलूक हते चित चाह ॥ इनको भारत हारे होइ  
 कद्विसंमै करि है सोहि ॥ आपका सिद्ध करै सुठा  
 ह ॥ करै डकाल पौनको हरा ॥ तव वह सुध होइ सुनि  
 ॥ इह विधि कही सुनी जनवीर ॥ ४ ॥ वागल चट  
 कको किला जानि ॥ बंडरी टला वामन मान ॥ कर  
 उवच को रचीत चीन ॥ कूरपिंगला धात कही न ना  
 र छ जप सि जिन नाम ॥ इनको हतन करै बिन का  
 म ॥ शिन पूजन जो करि है कोइ ॥ तव ही सुधता प्राप्  
 ति होइ ॥ ५ ॥ भेसंड सेन भास उर आना ॥ मारावत स  
 कप्य जल जानि ॥ सब पहिनको हरा होइ ॥ ग्रहोर  
 त्रिवृत करि है सोहि ॥ ६ ॥ मोंरने जिन तार्थ्यो मारि ॥



वदविनावकोकियोविचारि॥ अजगिरमर्षुं  
डेजेनाति॥ इनकोहनहारउनमान॥ वि  
ज्यकसारकाइ॥ नोहडंडकीदछिनाहनाइ  
हत्तकससकगोधसुनलेव॥ करममछसज  
केजीव॥ इनकोभारनहारसुचीत॥ फलवृ  
भद्विजेकीत॥ अहोरान्तिकोवृत्तकराइ॥ तवह  
सुधतामितिहेआइ॥ ७॥ एकजवकेसरिसार  
नाम॥ तरेकसर्थकरिसिंहववाति॥ इनधातिन  
कीसतिहेइ॥ तिलप्रस्तनकोदानकरेइतीन  
दिवसतकवायुआहार॥ तववहसुधहो  
धारि॥ ८॥ गजअसगवयुत्तंरगवधानि  
रणानैसाभाति॥ औरउटजेभारतकोइ  
तिपरिधंतसुजोइ॥ एतकरेतरइसुजसाइ  
जनत्रतिकरेइजराज॥ असीरीतिक  
तववहसुधपनेकोपाइ॥ ९॥ अगव  
विष्यात॥ करेमानविनइनकोधात॥ अका  
कृष्टफलनोजनकीत॥ तववहसुध  
न॥ १०॥ याप्रकारचोप्रायाचाइ॥ सववनचा॥

तनकराश। अहोरात्रिवृतकरिहैकोश  
अरी। अग्निमंत्रतेसदिहोश। ११। सिलिकास  
स्कराश। लिङ्गघातकरेचिनचाशहो  
पतिवृतकरेश। ग्यागउदानडुडदेहि। १२। त्रि  
स्यहोश्वाक्षत्रिकहंत। निरदोसकोघातकरत  
द्वैअतिअछवृतकरेश। वीसगउकीदि  
द्वयाथ। अववहसुद्धपनेकोपाश। प्रातेकहि  
माश। १३। वैस्यसुद्धताकोउत्तमान।  
आसतकवधानि। और  
जोविकर्महमेरत्तहोश। इनकोविधि  
विवेकाचंद्रायनवृतकरिहैयेकतीस  
विपनदान। तवहीसुद्धहेजानतजान। १४।  
त्रिवैस्यसुद्धकरिजोश। इतरपुरसकरिकेहे  
बुद्धिचडालप्रपतीकीना। आधकछव  
ना। १५। औरसुपाकओसुचंडार  
एतेहतअवोसुचाल। अहोरात्रि  
प्रराशमकरधरेअलास। ताकरि  
इहिवातजानतसबकोश। १६।

वर्म ० रसप्रकिसुन्दुवधीरा ताको होश्चिं डालसरी  
५ ॥ विप्रसनासनहीकरकीत तोवाडुजकी सुत  
प्रवीत ॥ डुजसुनासनकरेसुयोश्च वेदमातकोज  
पकराश्च अवपवित्रताकोवहपाश्च ॥ असेमा  
रिगादियोवताश्च ॥ १५ ॥ ज्योच्चिं डालसंगजो सोश्च  
तीनरातिपर्यंतसुकोश्च ॥ करिउपवाससुधता  
पाश्च जोचिं डालसगराहिचलाश्च वेदमातकोसु  
भरतकीन ॥ तवपवित्रताचित्तमेचीन ॥ १६ ॥ दो  
हा ॥ जगदेवतचिं डालको जो नर डुसतकोश्च  
कासिवसुतकेदारसतैतवेसुधताहोश्च ॥ १७ ॥ छ  
न्दपदरी ॥ चिं डालपरसज्योकहकोश्च ताकी  
जोसुधता कहतोश्च वस्त्रतसहित असनानकी  
न ॥ अवहीपवित्रहेनरप्रवीन ॥ चिं डालपात्रको  
परसजानि ॥ जो होश्च कूपमैजलववानि ॥ वाकूप  
नीरकोपानकीन ॥ गोमूत्रमिज्जाजवकरतली  
न ॥ आहारकरेतववहीकोश्च ॥ अववेकपक्षिमेसु  
धहोश्च ॥ २० ॥ चिं डालपात्रमेनीरहोश्च ॥ अज्ञानपा  
नकारलेतकोश्च ॥ ततकालनासिजलतोसदेहन

प्रजापतिवृत्तहृकरेशहसकरै

ज्ञानवकहेनाथतवसुहहोशाम्

लपडोनाहिजरिगयोनीरवहउदरमाहि

पतिवृत्तकरैकोशसुधीनताहिकीनही

क्रछसांततपनवृत्तहृकीनतवहोइसु

प्रवीना॥१॥ दोहा॥ विप्रसांतपनवृत्तकरै

प्रजापतिजानिविष्यप्रजापतिअर्धतेयावि

सुधीजाना॥२॥ छन्दप्रहरी॥ चोथोधि

सुधीकीनाः अवककुओरसुनयेप्रवीना

दिवसमोजइकवारकीन। प्रतिधौसघडी

गिविनकियेजाचनाअंनजोशहक

भक्तिकरियेसुजोश। दिनयेकव्र ६

रकीन। इहपादक्रछवृत्तकहिप्रवीना॥३॥ विन

नयेविप्रचिंडालधाना। भदिनसकरैतियो

हिम्पाना। गोमूत्रमाहिदेजवनिजोशाम्

रेतवसुहहोश। २४। इमधौसतलकइहयेक

गास। भक्तिनसुकरैधस्किउलास। तवसुह

वाकरैवृत्तजियराधिविचिंत

धर्म  
२६

लविना जानौ जुगे हानितहु आगयो जानले ज  
जव विप्रवाह करिहे जलत उजरज प्रभु करे  
शि शिवम वन कही सो धर्म जानि वह करे रक्ष  
नले जमाना जे धर्म साल्य वला प्रवीन पापे शु  
सख को सख की न २५ दी नती नत लक दधिते  
वताइ जव अन्न ताहि की सखाइ छत सहित  
खाइ वह दीवसती न दी नती त गउ को डाधले  
न आस प्रचगव्य को करे पान पुनि करे और अ  
सो सिधान तो म्हा निजो जव अन्न होइ शिक  
रे भन्न जव सुहोइ राइ छंद वै धरी भावउ  
छ अन्न जो पै होइ वा को नहि करे मति कोइ गो  
रस जूठो होइ सजात ता को कवून करिये पान  
इदही को पान प्रवीन करुता हि सुतौ पलतौ  
न मेक पलक छत को सति ले ज अच  
तौ ना हि सदे ज सुदकना नागि करि को को  
लोह पात्र वा कासी होइ ता मे पान की जये वा  
इह विचारि सुमो मत ता हि वलन सा  
वास है मवी नले सुहियास म्हातिका प्र

रिपान विष्णुसागकर कुमतिमाना ॥ २५ ॥ नृणां क  
 मुडसकपास तिल अंनघृत सहित कुला  
 इनकौकाडिले ज्युनिधीरा धरके अगति  
 गाव ऊवीरा ॥ २६ ॥ अत्र नृत्पजन सकाल पूजे  
 विप्रभोजक रावै सोइती सृगर्त दान करि  
 काहे हिद छिता सहित विवेक होइ सुद्ध कवि  
 थ कहंत ॥ जानत हे जे बुद्धि महंत धोवति ति  
 शः पुष्पकवध की रनी होइ ॥ श्री  
 लनी जाति वधाति ॥ चार वरन ती नके चर  
 विन ही ग्पान ते जो ति थ होइ पीछ जान  
 नेत जो को ॥ पहली विध करि ये जाइ  
 हन करि ये ताहि ॥ नहनिंतर धसि गो  
 वाम्रहसौ निकशिरतत काल ॥ नहपा  
 नको करि ये त्याग ॥ होइ भरत का डे वड भार  
 कौ त्याग कसे नहि कीन ॥ गोधरसंथर छां  
 ॥ जो कछु चित रहे संदेहा ॥ सर्व तर फल  
 करि लेह ॥ २७ ॥ इति धारासुरै धर्मशास्त्रे  
 ७ ॥ दोदय भासा छन्द वन्द प्रञ्जममय

ब्रह्ममासा ५ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मण कंचित  
परी गइ होइ विद्या मुत्र सुकरि दियो किहि वि  
मुधि होइ ॥ १ ॥ वैशरी ॥ तव वाकौ प्राय  
मि किति प्राप उतरन की चीने विधि गरु  
गो वर धि छि ॥ छत घन सो दिन तीन  
न पातरी जे करवाइ वह क्रमी छत व सुद्ध क  
इ ॥ २ ॥ त्रयी मासा पंच वधानि सुवान दान  
अनुमान तव वह सुद्ध होइ सुनिले कुया  
धुना कुसंधे जे वेसा उ को दान कराइ छत  
उपवास सुद्ध तो पाहि सुद्ध छत ते सुद्ध न होइ  
विधि को जानै सब कोइ गउ र व न को  
कसने वैकै कसि जे नै जु नु सं  
हैइ करि हे दान विप्र नो ज्य कराइ महान  
वला पोवाल पो न कोइ सुद्ध छत ते सुद्धि  
इ गउ र व न को दान करत देखै का  
जुतरत इहि दान ते सुद्धि होइ इहि विधि मे  
महावत तोहि विप्र न को करि नाम कोइ  
चगव्य चित हित नै लेइ

श्रौविधिवाक्यउच्चारणकी

रियो॥इजअग्यामसत

परिधरियो॥जाके॥अनोष्टमहि

फलकीप्रापतीललांस॥४॥दे॥॥आ

तिडधितैअरुड

विधिसेमरनहेताकीसुधि

५॥विप्रजायनिर्विद्वनकरिहो

एजउचरिहो॥ओउपवासएतजकीन

†

होश्अनुग्रहकरतावहसा

कीप्रापतिजानि॥आशिरवादइजन

मानि॥इखलकेउपरिजगजोश्

नुग्रहकरतावहसोश्असेष्टअं

वाल॥वासोहोश्अपथाचालताप

होसप्रापतीताकोहोश्

खेहलोभकोकाज॥वाक्योच

होश्समाज॥करैग्यानविनक्षपासुको

सप्रापतीताकोहोश्



धर्म० ॥ माहिनेमरुतकहनरताहिकरतविहे  
रु वतनेम होश्धर्मकीयामेछेम धर्मवि  
करताचारी ॥ निव्यवंहवाकरीजाश्रुजो  
इपुसनेमकेलागा ॥ विप्रनकेअपमान  
गिनाको विरथकरेअपवास पुनिजित्त  
हिहोयप्रकाश ॥ ८ ॥ जोजोनेमकरेइजराज  
सोसोनेमग्रहेसुधसाज ॥ ब्रह्मणावचन  
एनहेसोश्नहिकरियेइजहत्याहोश्राप  
तअपवासगोरनासनाततीरथ  
नतसवजान ॥ विप्रनसफलकस्योजोहो  
शनातरसफलहोतनहिकोइ ॥ १० ॥ ८  
वतमैतपमैजगमैकछुनूनताजोश्वि  
रुपाकरिहैजवैतवसंप्रनहोइ ॥ ११ ॥ ८  
इरीषत्त ॥ इजराजतीर्थजंगमनिनार  
सर्वकामनादेनहारजेवचनसपजलते  
सुजोश्नामनिनहीयतवसुद्धहोइ ॥ १२ ॥  
जवचनउवारनक हृदयेसुखवच  
बतहमेसोसोसर्वदेवमइविप्रजोनिजि

समिध्यात्मानि १३॥ पति-अनत  
वनी होश जामध्यकीटमांघीसुजो  
सतिकसिआयोडदीदापि

विधिकरैइठ। जलतैजप्रयोक्षरा

। अस-अननस्यसपासकराश

होत्रवाधूपवेसाताकीजोनसजानूसुदे  
इमोजनमहान्। इमकरैरी

सुजान्। १४। जापत्रमार्ग

जुविसर्जनकरिप्रवीना। जोजनज

यापात्रजुमध्या। जोकरैंनो ज्यतामैप्रसि

इहमतमहान्मनिकौवमानि

४कौवाहिजानि १५ ॥ इन्द्वैवरी ॥ ग्पा

पंचमो नसैलेइष्टयवीत

कारदेनोजनकीना। याकौकारनसुनौप्रवी

ना। १६। पहरपावडीचरननसाहि। जोजन

हकरनूनाश। वैटिठोलणीउप ।

नकरियेनाइसधीरा। जोजनस्वानल

जल। ताकौत्यागकरजननकाला १७

सिद्धकानसहोश्ताकीकडमुहतातोश्  
मुख्योकरोसप्रीतिअनुमुहतावाइरीति  
सपरसअनकोवांचिंडावा

इतकालअववहअनमुहकीतिहोइउज  
नविततीअसैडोइवाअनमासैकांटेसोइ  
पसैआंजलातीसदेइवासैउगनोहोइअ  
नउगनोकाडिदिऊकरिमंतसतपरअनक  
रिक्हीवधानियातैमुहलेऊमतमानिकाग  
स्वभावसर्पसुभाइमूढोदेशगइजोगासुन्य  
अप्रकोकरियेसागाअधीकहोयतोअधि  
कसुभाइआरिसेवाकौसनेसोलेसेइतन  
सागकरैतिहिवेरअप्रमाणाजोअनसुहोइ  
ताकोदोषलंगोनहिकोइअनिकोसंपाक  
मुकीनसुवरणजलकोप्रोदिएकीन  
नारकरैऊजराजततचिन

अथवाकीजअनंतरकीजो

इताजैसैहोइपाएसुजीकहीवधानि

मैताककडअमानिपातरसर्वकाठको

कासीपात्रनसमुद्गतो

शातासौसुद्धसुतहैजाश।लोहपात्रअगनिसे  
लाश।सीतलजलसुलेककराश।हाथीदंतसप्त  
असहेस।मणिअससंघरतनकोनेमइनको  
धरेनीरसुधोशतवहीसुधताताछिनहोश।२१ ॥  
घसिपाथानलेऊसुधजानि।इहीसुधताक  
हीवधाति।मृतिकानाजनअगतिजरशदि  
थेनवारीभूमिसुनाश।वेतवकलअसवस्तस्वी  
राउनकपासडसालाधीरनेनचरनकीकड  
आश।धौयेनीरसुधकेजाश।२२।सईगीधवाव  
तरपीत।सुनियेरक्तवासकीरीति।हरजवामल  
गावैसोशुजलप्रोहणकीतेसुधिहोश।२४।वांस  
तपारीसराअसचडा।चर्मवस्तुफलत्रतके  
काज।काठओरसुपादिकधात।तरतनीरते  
सुधहोजात।तीतवेरतोकरेसनात।बोधाकरे  
आचमनप्रात।पाचौलेइसंघकोनीरापोक  
राकरेसुधद्वैवीरा२पा।मंजारीक्रमकीटपतंम  
मोंधीमीडकपरसतअंग।जोगिवस्तुजयेपर

मर्मः साशतो न इत ही उचीष्टवता श्यो है मुनिको  
वाक्यमहान् जाको मानत सकल जिहान् रद  
नाभारमान उषफल हो शारघो मे लघ्यतने ल  
सुहो ह लेपन श्रुमधु परक के राश आस श्र  
मृत को जानु सु जानि ये इ उचिष्ट न ही जगजा  
नि असे मुनि नैक लो व वा नि र्पवहतो नी  
तदी ज सी जानि इन मे जुष्ट क र न ही मानि  
भाजत सा हि धा स्यो ध्यत सा दि तियो अंगुली  
ते न हि चा वि पा त र द्यत उ ठो न हि हो र धर्म व  
चन इ ह ज्ञानो सो श र द छि क त ना क सी त क  
ती वे का का ठ त र उ रि दंत सा हे हि मि थ्या वा च य  
क हे जो को श क ऊ नी च स सा स म हो श द ह नो  
का ते परा सि हे प्रा ति त व प वि त्र ता नि ह चै जा  
नि र र्क्ष आ ग ति वे द ज ल सो स धी रा सर ज  
पो न सर्व ये वी र उ ज के क ह न श्र व न म गार  
व हा वि ए ज त हे सु व सा रा ती र य आ दि प्र ना स  
व ता श गंगा आ दि न दी वित चा श वि प्र का ए  
न द हि ता के पा सा मु नि को व च न क हा वै पा ३

सा प्रापतिकालसमे दुजरजा स्वचाचारनही  
चितसाजा प्रापतिकालनिष्ठतिहि होइ चित  
विचधिरताजव होइ ताकूक कूसर्वयेहेता ॥  
मन्नाचयेगहिलेता ॥ ३० ॥ इति श्रीपारसुरेध  
र्मसास्त्रे धर्मचन्द्रोदयनासास्त्रे चन्द्रवन्द्यवृष्टम  
ष्टसमासा द्वावैशरी चन्द्र ॥ पकरिगउनेव  
धतकोशविनाकामनाजिविनहोइ वनिआ  
योपातकवितकामकैसेपापउतरिहैरामवे  
दओरवेदांतवधाताताकेवकाहोइसहान  
आसाजोवविप्रउदारधर्मसास्त्रसुतोअप  
रासुकरमहतेरत्तरहाशओरजतेन्दीजगत  
कहाजाताकोसुतोसकलइमिनेदाउनकोपा  
पकरनिर्वेदाजसेजलपृथवीषितिजोशस्त्र  
पोततेवैसुद्धिहोइयाप्रकारतेसनासहानधो  
पातकननासितजानिअहीपापकर्ताकोहोइ  
सभाकोलगैतसोश ॥ दोहा ॥ सूरजपौनस  
ननसिजाततसेहीवहआधम  
रतकेजाता ॥ अथवाचारितीनऊ

वर्म ० शिवता कहे वेदको सो श्रुती हो न कर्ता कुं  
३१ राजसमर्थ हो इ सबत को साज जा मे हो इ  
सा कुं राजता को कहे सभा मुख साज ३ के  
वल वेद परांगत श्रेष्ठ अस विप्र पुत्र जह जो  
पाच मध्यता मे धिति होइ ताको सभा कहे सब  
को ४ गायत्री जस न मुख साज जप करि वे  
वारो कुं राजा प्रकृत देव धिति जिहि हो श्रुती  
ये कुं कुं असा जो श्रुता के विसै होइ कुं राज  
ता को सभा कहे क विराज ५ होइ सुनि खरु  
त ग्यानि कुं हे जिनके मध्य नया निजिन मे  
जप करवत हाय वेद साम ते आरम धार  
से विप्र सभा मे होइ वाके सभा कहे सबको  
पहली कहे पंच कुं राजा जिन मे होइ सु  
साज अस विप्र तहा तिथ होइ ताको  
कहे सबको ७ या उपरति होइ कुं राज  
केवल नाम ध्या रिका साज वा मे सभा  
नाहि वैसा विप्र नही ता नाहि वा सो ६  
हे धीरा ता मे सभा परों है नाहि विरा ८ सा

रमारिगधर्मप्रसादा जाकों कहि है शाल्विधान  
जाकों पापलगत हेना हि सव्यतत्रसगुनवा  
नसहोश ॥ १५ ॥ जसे को वसइ जसता ॥ जसे ज्वरव  
नाव कुरंग ॥ तसे विना वेद डुज एज ॥ ये त्रिय नाम  
धारिका साज ॥ चित्रचर्म को सुनये डंग ॥ नाता वि  
धि को होइ सुरंग ॥ तासो चित्रचितरो की न ॥ जसे  
ब्रह्मपने के चीन ॥ संस्कार विधि पूर्वक होइ ॥ अ  
से कहिस मज उतो ॥ १० ॥ जसे परसनपुसक  
होइ ॥ तिया मांन वहानि स्फल जोइ ॥ वातागुसु  
रतीन के माहि विवक बहु फल शयकतां हि ॥ प  
न विना डुज दी नूदाना ॥ जाको निस्फल कह पु  
एत ॥ विना वेदको उवाहाहा होइ ॥ जाको निर  
फल कहिसवको ॥ ११ ॥ दोहा ॥ ग्नामस्थान  
विनसुभ्ये जलवित्तकूपसजोइ ॥ वेदविना डुज  
एजति कुतावधारिका होइ ॥ १२ ॥ छन्द वैशरी ॥  
नजो अतद्विसमसान नृमिदिदीप्यमान अ  
मी सुगुमि ॥ वह सर्वतहि जामे के हाइ ॥ डुज एज  
धर्म जत नृत्यताइ ॥ डुज धर्म रहित सव नदि होइ



मि सोनर्कजातसंकातको ॥ १३ ॥ सम

१२ अतमदमातिहअतिसर्व

जिमिग्यानवागजोविप्रहेशवह वमदि

जोकरैसोशतेवहपूजिवेजोगजानिमनि

कदेवचतसोतेजमानि ॥ १४ ॥

गतहोशतेककुसर्वसमगइतोशकलिका

गओएतिस्वानजानि २

धेवधानि ३ असगउगाह ४

जपइहपंचजगजमहेअपूजा १५ जो

सुधेनकोनाअसपंचरिपनवीसेती

हेअमेदजगवसुजानिवहनहीया

वधानि जिनकोजउदमेतेतडाहि

इहसर्वपातकविचारवा

वधानि तामेसुजारियेसुनेजानि १६ जि

ग्यानवागसोविप्रजानि

सोशकारताकल्पानकेजातलेजाधामे

मातियेकछुनासदेजाएखिसु

उपसोशपनिकाएलेसवदप्रभमहेश

इजवेदमातैरहितजेव वहअवहृदजैजानि  
लेजाअरुवेदमातजोसत्रजानिपातासुतलके  
जेवकानिबहविप्रपूजिवेजोअपहोइतेइजवान  
माऊउत्तससुजोइवेगसुभावकोविप्रवीनकेपृ  
अतीकलोनिप्रवीन जोहेजसेइसुइकोशतोनीन  
पूजवेजोगसोश अतसोनइइकोउअनामाजे  
कोगउकोनातसामा अतिसिलवानजोगुधीहे  
शाशेहेनताहिकोसामुफिकोशविनहीसमानने  
पद्यदिजानाअसहेसमानतैताहिसानिपूज्योइ  
इवेइअकहाइ।सुरीसुजासिदेशीरजाइअ  
सोनकोइअपमेकहाइ।विद्वानधोडिसरखपूज  
इअथधर्मसास्त्ररूपीकहत।तासेसुवेविकेअतिम  
हता।करवेदरूपजोयडगधारितामेअविप्रली  
ओविचारि।इजरजहेइक्रोडासुलीन।तोनिउ  
कछुउच्चारकीन।सोपर्मधर्मवहजानिलेऊरु  
पकेअगाइकरिकहेते।अवहधर्मउच्चारनको  
धीरा।अवकऊअोरसोंसुतवीराअपआपपा  
यउतरनसुरीति।नहिकेहधारिचितमेसुप्रीतवि  
प्रनउलिधिवेसुनोकोश।चाहेसुकछुकछोम  
पहोइतववहपापसतगुनोहोइरूपकोनलो  
सकानकोप्रभातकसमाननितिक्रतिजोइक

हिये जुत हासुर्यान होइ कहिये तिज प्रवित्र  
आप आग ॥ असवे दसात जव करै सा ॥ मुंडन  
काइ उजति हो काल ॥ असवान करै वह सदि  
नवात् ॥ इकराति वास गोशाल को न जावे मुज  
हासुर्यान चीन ॥ वरुवा ससीत ती धमवताइ  
आति पवन वेग को सहै वाइ ॥ आत्म सुरक्षति  
ज करै सोइ सक्ती प्रमात जोग उ होइ ॥ निज ध  
ते तथा परब लो होइ ॥ तामध्य ग उ चरति मुजोइ  
फिरि होइ रोह निज मे कहत ता को नवता वसाति  
महंता निज मात चूवती व होइ ता को नवता वे  
सम कि कोइ तव हो मुवे टनू आप होइ ॥ पडि  
गई तथा गिल गइ होइ उधार करन सब तरे जो  
इ प्र निज तन सुख सा सुकराइ ॥ फिरि सै मे रोनि  
मेधे उपाइ ॥ तिथि होइ आसन सुवीर ज दिवल  
भव हत ज व वल कुधीर ॥ सुरति विराज ज दिवे  
ठ जाऊ ॥ मत्त सातात जि के ले कुलाऊ ॥ जि ह स  
मय ग उ आतुर स होइ ॥ अनि सेष द्यस क कुत  
हा जोइ व कुचो र व्याध को नय व दानि ॥ जाते  
सुरक्ष करि मति महान ॥ वास ए सुअर्थ वाग उ  
नामी ॥ त काल प्राण को करै साग ॥ श्मि ग उ वि  
प्रकी श्चि की न ॥ उज हया आदिकी सुनी प्रवीति

ए ३

अवसुनोयाहिकीककृतोशपारतछपायते  
 शा१८ गोवधसुभाइवणिगधोहोशलायक  
 प्रथश्चितसुजाइप्रजापतिनामवृत्तजानेः  
 छवर्तजेगुनव्यानि१९ दिवसयेकवरभोड्य  
 न प्रतिदिवसदसरेसुनिप्रवीन दिनरहोव्यारि  
 कासुयोशभोजनसतवेकरिदृजहोइइकदीव  
 अजाचीभोडलीनइकदिवसपौनकोहारकीन  
 दिनतीनकरेयेकवरकरेभोजदिन

हीनतीनअजाचीभोजलेहिअहारपौ  
 यकरेहीनव्यारभोजइकवारकोन

लीनहीनव्यारिअजाचिलेयअन

हारकीजेपवंतरशाप्रचितसंपूरपडिजायजव

राजकस्कास्तभोजकरवाइतद्यभोगउरोकिदी

तववदेफेरिमरिगइहोशयेकहेसखजे

नानविप्रसुरभोजदीनइकदोइतीनवाच्या

निद्रेयदछिनाविप्रमानितवहीपवित्रतापाइवीर

राजपूड्यकरियेसधीराजवसिधसुधताओइ

नामैजुनेकनहिसंकनाहिररशानिअ्रीधाय

मसाअधमचंठेदधनासाछंदवन्दसप्त

मयवससासा॥७॥दोहा॥सुरनिनकी

वाधेनवधनकीनासधेनताहितजानि इह

प्रवीन ॥ औचलाशोकतगशुबाधतकोप  
बंधनताको कहते है इह जानत प्रवीन ॥

श्री ॥ माफिक अंगुष्ठके पुष्टकीन  
प्रवीन ॥ माको सडंड कहिये प्रवीन वा डंड अर्ध मुले  
कुमासि ॥ अडंडता डता कर डता नि पुनि पाप उतर  
नकी उपाय ॥ सो कही प्रथम जे ही कराइ गो वत ओर ड  
ना करंत ॥ आचरन करे जे प्रती म हत ॥ नरग उरो कता क  
कौइ प्रवये कता हि को वत होइ सुरभीन क ड व व न  
कराइ वत दोइ भाग को करे ता हि ॥ फिर करे ता ड भाग  
अता द्वि ति हती न वाट को वत मानि ॥ यो करे गउ को म  
त कोइ धरन सु व ति पुनि करे सोइ ॥ सोइ ड ड रंग मे  
अधि गाइ वा को सरो कि वी क हें वाइ ॥ अथ डुरा की  
पार भूमि ॥ अथ वा स मु ड वा न दी रु मि ॥ आ डा ज किं दर  
क ड सोइ ॥ जा मध्य गउ यो म ल क होइ ॥ जिन कंठ वी च  
बंधर ही टाल ॥ रक्ष क सु द स ती न की स भाल ॥ जे गये वे  
वि ब ह ध र वी ॥ व न मा ग त थ ध र म ध्य धी र वं ध न ज  
करि दियो त वे कोइ ॥ जा ते जु ग उ व ह म त क होइ वं ध  
न सु वं ध व ह्जानि लेइ ॥ या के नि म ति क हि ड व धा  
गो व ध सु प्रा प उ तर न सु भाइ ॥ ता के ज हे त कर न उ प्रा  
४ ॥ ह ल त ले म र न प्रा प ति सु होइ ॥ म रि ग यो स क ट के  
या कोइ ॥ ना व त सु वे ल म रि जा त धी र चि थ ग यो म

श्रीर। जे मत्तक जे वौ जे द्यु अंते जे म  
 हजानि ले जे प्र। मालिक सग उको मत्त हो  
 र मत्त वा वरो क हत को इ चेतन सु अ चेतन ले  
 नि हे निना कामना काम मामि करि हे स्व  
 हा वलि द्यु जो दंड ग उने देत नष्ट करि कै  
 यन या प्रकार। गो मत्त क हे ग इति हि वार। प्रति  
 पात वह पूजाणि। जा को ज अ व स्थाने  
 गि। करि जतन परि काले ज वीर। मो ध दि सु  
 रि वा श्चीर। सुरभी रते ल देर स हेत। नेत्र रोग  
 गरु न गा श्च। तर करे ता हि कि जो उ पा श्च।  
 न मा हि। वा को सु पु र्ध को पा प ना हि  
 म वा धी सु गा श्च। धि ट कर सु मा  
 हि। न सी ल श्च। वा ति हि नु ज ग हे  
 ग। म रि ग श्च। उ तो पा प ना हि  
 दे धि नि ज चित्त मा हि। क उ गा व  
 हो ली दि वा ल त ल द वी हो श्च। म रि जा  
 मा हि। द्यु न सु ता हि को ल ग त ना हि  
 ही जु ध गो द्यु म्। जा नि। इ क वी र ल य त जो  
 नि। व ह जु ध नि वा र न कर त ना हि।  
 मा हि। इ ज द्यु न कर त मि।  
 इ क मत्त क न यो जा को पि उ ध इ क इ क सु वा

की हत्यामात्र प्राचीनसुसर्वही करेता हि कारहप  
घातववा दंडकोश परिहारउको कस्यो होश वाके  
सुधावलगिगयो जानि प्रह्लासु अंगकी समवधा  
नि जवतलक धाव नरिहेन वीर तवतलक वदगी  
कर ऊवीर करि प्रीति सहिव सुरभी नमाल करि ज  
नतव ऊत करिये समाल इदि पूर्व अंगकी समसु  
जान नरि ऊवो अंगमन लेऊ मानि असहीन अंग  
रहि गोसनाइ तो गउघातको अर्धताइ प्राश्रितसु  
के वित रावचेत कविके हेनाय वदिधाव हेत ७  
ह ऊध जत करि हे प्रहार पुति ओर दंड पासा रामा  
रि क ऊसिला हाथते देवलाइ मूर्च्छा सुवाइ करि प  
रीगाइ गोवध सुपापताको वधानि पुति पाप उतर  
न करि वधानि चवाइपाल वध्या सुपाल वृधत सु  
उधको रस्यो वाल ब्रहविता उधम रिगयो होइ पूर्व  
विभाग नरि मिल्यो कोइ या हेत मरिगयो वध जानि  
पातक सु पूर लो गो महानि उ जो पूर सगुने जघतने  
न मइ आन हाथते मृतक अने ताको जलको वे  
ठकोइ पातक सु गुतर विता हि होइ याते उगउके  
वधवानि नरि रत गुस जो हे सुजान ए गोवध  
पुथहि को उगुतराधि तो वामनु व्यकी हे माधि  
काल इक सुत्रताम जिहिन कतां मवाको सुवा

तत्त करे सी स म ह उ च पा श ज्ञा त्रै मु न र्क के वि च ज्ञा इ १८  
 वा न र्क मा हि ने छु ट्टे को श उ नि म ल लो क मे ज न्त हो इ  
 ज व सा त ज न म ता ही क ले सा ति हि क थ्ये ग रा हि हे ह मे स  
 १॥ वा हे त पा प पर का स की न न हि गु म रा वि हे जे म वी  
 ना अ स व त सु अ चा र न ध र्म ले ज्ञा उ नि वै ल क द न हि  
 घा त ले ज्ञा हे ज्ञा त क वृ क सि द स्ता न ज्ञा ते प वि त्र ता हे  
 म हा न की न्हा उ पा व जो ग र्ज हे त अ च ल स री व णि व हि  
 स चेत व व ट्टे क प्रा य श्चि त कर ज वी र अ स ग र्म सं भ वे  
 न यौ धी र जौ व धा व धी प्रै द स हो इ प्रा चि त सु वा ट क  
 रि ये ज दो श हे ग यो अ चेत न ग र्म गा श वा धा सु ती न म  
 श्चि त क रा श भो व ध प्रा य श्चि त करे को श मुं ड न क र  
 व तो ज व ही दो श व ट्टे दो श के रि प्रा चि त सु की न डा टी  
 र के स धा र ण म वी ना अ स ती न ना ग को कर त को इ  
 त व सी धा धा र णा क र ज को इ हो इ ति पा त न ज व ही  
 गा श सं जु क्त शि का मुं ड न क र रा श १२ प्रा चि त सु क  
 रे ये क व ट्टे करे को श व धा सु दान मे करे दो श ज व क  
 र दो श को म ति म हा न का सी स प त्र को करे दान को उ  
 करे ती न व ट्टे को जु वे स वै द न व ड्टे को करे पे स

दी व त स य न  
 परि पू र्ण अ ग प्रा ति अ ग हो इ ६



ताता हि संग ॥ तव उगाणित वृत को करे जसा  
कह्यो परा सुखा प्रकार ॥ गोवाध करे तिन देत

तिन की ज सुद्धे इच्छे स जित की  
स्त्रीवा लगु अरु वध हेत ॥

चेत ॥ किय को ध दो स हे के स भाग ॥  
रजसाग ॥ १३ ॥ शत श्री पार पुरे धर्म सा लि धर्म करे

द्वय ता सा च च व द व द म म श्रु व स मा ता ठ ॥  
दोहा ॥ आरु वत सु व र ने हे तिन हित इ ह वि वि

पाप उ त र ने की सु वि धि क ही न व ली सु व सार ॥ १  
गं पा ग म्य पुर स त हो इ पाप उ त र ने की वि धि सो इ

चां ड य न वृत करे ज सु जान जो ते हो इ व कृत के र्मा  
न क ल प द्दि मे इ क स ये क मा स घ टा गु स हित वि

वे क सु क ल प द्दि मे ध रे ज ला स ब ठ ती कर क ये क  
इ क त्रा स हो इ आव स धौ स म हा न नि रा हा वृत क

र ज सु जान चं ड य ण वृत की वि धी ये हि धो लि र  
धी ली ना हि स दे ह कु क ट के अ डा पर मा त

स इ ही पर मा त आ इ प्र ति ध्या भा व सु को इ इ छ  
र स को उ जो हो इ ध म सु ध ता कू व ह जा नि प्रा प

इ न ही म न मा ति उ प्रा  
इ य न संप र न जो इ वा स  
ने व र्ने व न स म प र

करव

होइ सुनिबीर उजहे करत सुपाकी स्या च्यंडाली  
 रत अंग विप्रन की अगपाते पाइती नएतिके  
 उपवास कराइ ४॥ मुंडन शिवा समेत कराइ साजा  
 पतिव्रत तीत सुभाश बुसा कर्च जेवत करेइ विप्रन  
 को भोजन परिदेहि ॥ नित गायत्री मंत्र जपत दो  
 शार्ज कौशन करत ॥ रासरा कौद छिना पुनिदेहि  
 होइ सुघताना हि सदेह ॥ द्वात्री तथा वेस्प जोह  
 श चिंडाली संग करिहे कोइ तीन प्रजापति व  
 तव मानिती नग उचस करिहे दान ७ वा  
 सुधा किचिंडली होइ तासो सुइ संग जोको  
 प्रजापतिव्रत छे छे कराइ गउ  
 मैघाश ८ ॥ मातासो वानगनी होइ

कहिये सोश ॥ सोहवसी जो संग कराइ तीन  
 व्रत करे सुभाश ॥ १॥ चन्द्रायन व्रत  
 ल ॥ इंडी छीन करेत त काल  
 करि संग ॥ करेत त छिन इंडी नरा ती  
 न ॥ विप्रन सो निवेदन कीन

१५ वि निश्रम इ सो वनाश  
 करवाइ ॥ दस वय म उरु करि जुग लदा  
 इह पार सु करे व वा नि ॥ तव वाकी  
 हाश वरन करे सुसाची जोश ॥ पि

ज्योतिषज्ञानि भाणुसकीतिथासुधानि पुत्र  
 वधमित्रतिथिहोइ मामीगोत्रवधुजोकोइ इत  
 सोहोइकस्यो जौसग तीनप्रजापतिवृतअभा  
 करेदोइअथनवत होइसुइसंदेहनकृत १  
 विप्रनकोदक्षिणापुनिद्याय पाचवधनगोदान  
 कराइ तवहीपापसुनिर्मलहोइ जैसेदपतमा  
 जौसोइ वहनिर्मलहेजातसुअन असेकहेसु  
 निरवेत गोसगमकरीजोहोइ तीनरातिवृतकरि  
 हेसोइ गर्भदानविप्रनकोदोइ सहिषीतथाशु  
 करीसेइ इतसोसगकस्योजोकोइ अहोरात्री  
 वृततेसुइहोइ प्रसूजातिवेस्यातिथिजातिउष्ट  
 रीओरसूकरीमानि इतसोमोहवसीकृत १३  
 जौपेसगकस्योजोको प्रजापतिवृतदेह  
 राइ तवनरवहसुइतापाहि १२ डेरूपगीना  
 दविचार इतकेहोइवजावेनहार डरभष्टिका  
 लविसेधनधीन असेसमयेसुनप्रवीनवदि  
 गेहभयेआतुरहोइ वासमयेइमइष्टीजोइ  
 जेविडालजातिजेचीन सपरससनासनहकी  
 न गोवाकीहेगहरीपक एकरातिथिधिरहे  
 निसकेयेकरातिजलवासकराइ ओरकेजा  
 विधिमुनोमुनाइ पुस्यीसखलताकोमूलप

राम  
 ३७

नञ्चौरवाकेफलफूला।द्वयञ्चौरसुवरनको  
काथा।ताद्यतञ्चवृत्तकरियेनाथ॥१३॥प्रा  
श्रियतपरपूर्वनञ्जवहोत्र।विप्रतनोत्तर  
वैसोश।दोइगउदछिनामैदेखा।तवहीवहेसु  
दतालेश।नाथकवीसुरकरिनिजञ्चैन।यस्य  
यन्मनिकेवेन।याञ्चनुमानवरनयेव्यारि  
तीनकोतियजनसोनिर्धार।पातकतवेव  
शिगयोर्च

सेन

इतिसेहीवृत्तकोफलमाना

गानि॥१४॥इकवरनोगीगइ

तो

ताकोकरवावैउपवास १६ जाउरसकोकाहयेसो  
इ जाकेगर्भउपपतीहोइ अथवापतिउठिगोकरि  
साग मृतकहोगयो मंदसुभाग जागरमसोउपप  
तिहोइ ताकीमेसममार्ततोइ देसजिकालेनाको  
नपापकर्मगो जाकोचीन तोपतिकरि केतियासु  
न ताकोविप्रसंगकरिनीन वातिअनष्टकहेसव  
इ आवागमनकवनहिहोइ पितामातवाजाउगो  
ह प्रापतिऊईतिया जोतेह तोवहगोइउचिष्टकरा  
इ पंचगव्यतेसुद्धसुभाय १७ मृतिकामइउ  
होइ ताकोसागकरिऊरखको वसतस्त्रादिकाठ  
वडताग सवसंचयकोकरिहेताग तासाका  
हेतेइ पंचगव्यतेसुद्धकरलेइ जोकासी  
र नसीतेसुद्धकरियेधीर फिरवहजतनकोइउजरा  
उ पापउत्तरनेकीविधिसाज विप्रकहेसोइकरले  
ऊ दोइगर्भकीदक्षिणादेश प्राजापतिवृतकरेउ  
चाइ औरवाराकीकहुववाय अहोरात्रिकोवृत्त  
हलीन पंचगव्यसोसोधनकीन पुत्रभातसंजुत्तसु  
पेस विप्रनभाज्यकराव ऊवेस वायु आकासभव  
न अगनिजलभूमदमी आतजगपकेसाहि  
वितकवहहेनाहि जेउपासवृतेहेजगसोइहे  
वित्रजानतसवकोइ उजमुषसो जोकस्योवधाति

ए  
३

रिक्केजगमेड

होसुहतासुनगसमाजाइतिश्रीधार

धर्मचंद्रोदयभासाष्टवन्दनव

॥ वसुश्रमेदसज

॥ छन्दवेधरी ॥ ऋषचन्द्रायनवतस

कोआचमनकरेश

आधोवतहीकरेअवस्य

करिहेतुल्यनरककोवासा ॥ सुडअतवास्त

ताकोअतअ

नाजा। वरजनीकहेअतसुमाजावकरी

होअनकराश। वासराशेसोअनसुनाशभोज

गरकियोहोइजोनाहि

छन्दबधरी

लस्योरेसंज्ञाकरितियोचाहु तववजातिमोदमो  
 दशाकराश्ववहहोइसुधसदेहनाहिकोउसुधश्च  
 मोज्यनमाड्यकीनतवप्रचगव्यतेसुध्वीनक्षत्री  
 जुओरककुवेसहोइभोजनअनोड्यककुकेस्यो  
 होइप्राजाप्रतिवृत्ततिमहीकराश्वयातेजुसुधतामि  
 लतआइकहेपिपूसजानोसहेतकचतलसराज  
 तसचेतवृताकफलओरजानलेकुगाजरसुजा  
 तिकाठोसतेहअसुधवृत्तकोगूदमानिअस  
 देवइव्यतहितेकुमानिकचकाचतामइकओर  
 कोशपुनिइधउठडीकोसुहाइपुनिओरभेड  
 कोधीरजातिअपानपनेइजकस्योपानवहती  
 नरातिउधवासकीनअसुधपंचगव्यलेसुध्वीन  
 क्षत्रीजुवेस्यक्रियावानहोइवृत्तउधविज्ञानिनको  
 सुजाइवाकेजगोहकारिसुदेवपुनिपित्रकर्म  
 जामेसनेवइजरजताहिकोकहितमाइभोजन  
 सुकरनउच्चितवताइवृत्ततेलछीगुडकुसधीर  
 वहसरिततीरलेजाकुवीरइजरजसुइकोमोड  
 कीलइहतरहकियेनहिदोसलीनवहसुइमास  
 मदिरासुयाइअसनिचकर्मकरिहेसुमाइओसा  
 असुइकोहरिपानअंडालजोमित्यागकुसुजानि  
 जोसुइकरतइजकीजसेववरजितसुमासमदिरा

ए  
 ३

नहिकरे कुजराजहोइ यामेन सकमा  
 नोनकाश द्वाः श्रमान भोजनो कडाकीन जात  
 कजसूचवामृतकचीन प्राचित सुवर्नवरनहिक  
 शानिकहिये सुवावयासे सुमाति जो मृतकसोच  
 मे कुजमहान भोजन सुकरिलियो होइ जान इस  
 सहस्रावकरिमत्रजापवहिवेदमातका सुनो  
 प्रातवही पवित्रता कुज मिलत कडावेस्य सुजतो  
 जनकरत सतपांचवेदमाता सुमंत्र जपि हेज सुइ  
 हेतव सुतंत्र जत्री कुवेस्यकी सुनो आप सततीनवे  
 दमाता सुजाप्रातवही पवित्रहे सुनो तेह इस जात  
 सोचकी जातिले जा ब्राह्मण कुसोचमे भोजकीन  
 तव प्राणायामते सुधचीन सतसइजापते सुध होइ  
 इहक कुवाप्तसमसाइतो ७ ॥ छन्दवेवरी ॥ सु  
 योऽन्नच्छिद्यते तेल ब्राह्मणके घरमित्यो सुमे  
 लवहपवित्रभोजनयो भाषि मुनिको वचन भली  
 योसाधि योऽपतिकालसमे सुनिधीर भोजनक  
 असीतरे सुनू कुजसोइ सुनसता  
 ननमन  
 सवगलानिहरंति नाइदासग्वालुहेसोइ कल  
 वि





नमः महा नमः इन्द्रो उनको करि हेदाना मो जनन  
 सरवभ करण सुद सुद तव ही पायो १३ अहो राति  
 उपवास महान सुध चि डाल को करत मुजान गर्त  
 न गो वर दधि छीर छतस कुसो दिक जान ऊधीर प्र  
 च गव्य हेया को नाम हेय विप्रता को इ ह धाम करे पा  
 न ज्यो धरे कुलास प्रापन को करि डारे नास गर्त मृत  
 असे जो ले इ तिल समान रंग जा को हो इ काली गर्त  
 हो इ जगते इ गो वर ता ही को पुनिले इ तामर वरन सु  
 र मिले छीर सुकल गर्त को दही सुधीर कपिला गर्त  
 गहन छत कीन प्रच गव्य मे सुनो प्रवीन महा प्राप  
 न को नष्ट करण असे मंत्र गव्य जग माहि १४ अ  
 र वरन की गर्त न हो इ तो कपिला को सुध जो इ गर्त  
 प्रपलये क सुलेय इ धी जानि पलती न सते इ इ क  
 पल इ छत जानि मुजान गो मय अर्ध अगुष्ट प्रमा  
 न प्रल कुसात द्वध करि लीन इ क पल ता हि कु सो द  
 क कीन प्रल को क ह प्रमान सुयो लि चो सटि मासा  
 ता को तो लि इ ह संपूरन करि इ क ठोर न्यारे न्यारे ना  
 म सु ओर ति न सौ मंत्रित कर कु महान व करि मि  
 ला इ देह मतिवान गायत्री मंत्र सुते हि गर्त मंत्र मंत्रि  
 त करि ले इ गद्य इ रा मंत्र महान गो वर मंत्रित कर  
 कु मुजान १५ अ प्या इ स्व मंत्र सुते इ मंत्रित कु मंत्र

० मलेकरिनेइ दधिनामणोमंत्रसुवेस दधितेमंत्रित  
 करउहमेसातेजोसीसुक्त इहमंत्रवताइ धृतनेमं  
 त्रितकोमुताइ देवसिलामंत्रमतोइ मंत्रितकरउके  
 प्रोदिकजोमपकेपलासकोमध्यपान तासोअवमत  
 कारउसुजाति केवटपत्रसुतोनुमवीर तासोअववत  
 कारउसधीर मंत्रितधृतकुकोपुनिलेइ करनूहवन  
 अगानिमेंतेइ सप्तमंत्रदरभाजिहिहोइ अतनामान  
 हिच्छितसोजोइ अतिसोमासत्रवताइ इहमंत्रसुहव  
 नकराइ सामित्रीवमंत्रप्रहोइ यासोहवनकरउम  
 तिवात इदंविह्विक्रमेधामंत्रसुमानस्तोभ्यरितिःक  
 यामंत्रस १६ गायत्रीअमहादतथासू हवनकरनू  
 इतसेसमाहिपुतिमान हवनकियापीधूमनमानिजो  
 अवसेसाल्योअनमानि ताकोपानकरउमतिवा  
 न आडोहनवोकारसुकीन उच्चारनवोकारसुली  
 नयासेफउिठायप्रवीन तीनवारकरिखे उच्चारफे  
 रिपणविकोजानोसार अचवनतीनवेकरलेजया  
 मेकेधुनजानोवेव अतिनमाकरमिहीयोपापमा  
 ननदेहविसेधितपाप असेपापमहातनधोर ताको  
 जुगतिमुनोअवओर वस्तुकेवदत जाकरिनेइ स  
 वपापनकोदग्धकरेइ जसेअगनिकाठकुआइ  
 तसेपापदग्धहोजाइ परधरभोजनकरनूनिदत

अथवा नो ज करन मे रस ॥ जो जगि करवे लाइ के नाइ  
ताको समनि अपच मनसाहि ॥ वाघरि नो अप करे ड ज  
राज ॥ करि चंद्रयन दत को साज ॥ तव ही होइ मुछ ड  
ज जाति ॥ इह निचे करि मनसा नि ॥ जे हे अपच जगत  
के साहि ॥ तिन को दान समुदिये नाहि ॥ विना दान कुछ सु  
धन हि होइ ॥ दया प्रति ग्राहन जो दोइ ॥ न क प्रत दोउ म  
नसा नि ॥ निश्चै ले जचित मनसा नि ॥ आगनि होतरी हे  
जग जेइ ॥ सदा चारु धर्म करेइ ॥ पंचगव्य ज्यो करे हे नाहि  
निरदत के जाणु मनसा वि ॥ जाका अन्न को सुगोयेने  
वा न दान न ही करत हे देवा ॥ १५ ॥ पंचगव्य करहि सुते  
इ ॥ पर अत न दान करि लेइ ॥ उठि के प्रात निरंतर होइ  
पर सुपाक मै जेरत जो ॥ गो ह धर्म मै वर्तत मानि ॥ निदसा  
सतर वर जित जाति ॥ रिस है जिन करे के सुनि ले ॥ प्राक  
त मारग जो जग ते ॥ जो भ ह चरन न करि के ही न ॥  
रतत कस्या जाइ परवीत ॥ १६ ॥ जो विवाह के सम हे के  
साहि ॥ अग्नी की परक्रमण कराहि ॥ जो ग हस्त आप  
न पौ मानि ॥ वाको अन्न दद्या करि मानि ॥ दद्या पाक  
को मति कर भोग ॥ न दान अत करन नहि जोग ॥ जग  
गुगमधि जि सा ड ज राजा ॥ तिन की निध करन नहि स  
जा ॥ जग गुग के अन्न रूप दद्याति ॥ विप्रन सोइ ह सिद्धा  
ऊंकार द्याको नाहिन करे ॥ ऊं चार

जो है जगत्त वडे हे लोग तुकारे न उधार न लोग उनके  
 कते डडकारे जो नमकार करि कुतति होरि करे प्रस  
 नइसी विधि सोइ ताहि अवभा कवृत्त होइ १५ जनक  
 रिके ताडना सोइ विप्रकंठको जानू सोइ अथवा को  
 ताडना वास करि विवादि जिते तिन पास जाके तिस दिन  
 होइ विकार सधिरपंडे नृसिमे मार अथवा नासा मेधि  
 ति होइ तार्की वात मुत्त सब कोइ अतिक्रच्छत करे जो  
 कोइ तव प्रवित्रता तार्की होइ नवदीन ऊपरयंत सुजो  
 इ अतिक्रच्छत करे जो कोइ तव प्रवित्रता तार्की होइ  
 नवदीन ऊपरयंत सुजोइ अतिक्रच्छत करे सब कोइ  
 प्राणी पूजे अंत कहइ अंजुली तथा आज लोपाइ  
 इत न अंत भोज करली न को उपास राती ती न वा  
 द्यत की नी मुत्त सुजान अतिक्रच्छ संपाली जे माति २०  
 सख प्रकार पाप जग जोइ जा मानव सो वरि गो होइ  
 चाहे उहे निर्दत ककी न असी विधि जो करे प्रवीन वे  
 दसात को मंत्र महान जिन को जप करवाइ सुजान जव  
 प्रवित्रता जग मे पाइ असे नाथ कही समजाइ २१ ॥  
 इति श्रीपाराशुरे धर्म सा जे धर्म वदो द्य भा लो  
 न्द वन्द दशम म द्य स मा ता १० ॥ दोहा ॥ विनव  
 दहत वर से सुजलता की महिमा माति जा मे न्हावत  
 पास को उदिव्य स्नान वह जानि १ वा जल लेके कहिइ

एम  
 ४२

गतकविलानकरतनवकोशज्ञाकोधाजगमेरुतंग  
 नफलहोश ॥ छन्दप्रवरी ॥ जेमाननिमतिउ  
 सजजाइजेदेवपितसुरजसुभाइतितकोसमूह  
 पवनसपाइनगीसंगजातचित्तकियेचूपाभारति  
 वाननिसंतेजहोश ॥ जिमितिकठनिरकेजातकोइ  
 तनेसुतीरतलतेसुभाइगरपनसुफेरिनहीक  
 राशतवतलकधोवतीनहीनिचोर ॥ धोतीनिचोरिमें  
 ह्योरिसुतदेवपन्नकीइहेवात ॥ हेकोनिरासफेरि  
 वजाता ॥ असनानकियेवीछुजकेस ॥ झटकारिनही  
 बुधवेस ॥ जोकरेविधूतनिकेसबोइप्रापतिसुला  
 फलताहिहोश ॥ गतिपित्रदेवकीइहेचीनानहीदियो  
 लगनहनकीन ॥ ३ ॥ जलमामतथायलमेरहा  
 ॥ जलतेनलेजलसधजाइ ॥ जलमामधडोजोरहके  
 केसनसमेतवहसुद्धहोश ॥ अनिलानकरिकछुपा  
 कीन ॥ असछीकलियेपीछुप्रवीन ॥ सुताजमधेनो  
 नकराश ॥ असहचल्यापीछुसनाइरथ्यासुना  
 जानोगलीन ॥ ताविचिनिकसहेनरमलीन ॥ सुने  
 तकेसनसमेत ॥ जलकोजपरसकरनोसचेत

वस्तुनवीनतममेधरंत। पीछूसुत्राचम  
 रंत। असनाकसीटतालेतधीक। अ  
 ढंतठीका। धाम्दुअचरनकियो होश। चिडाल  
 नकस्योकोइ। रहीनोसकानसप्रासकराइ। तव  
 वित्रतामिलेआइ। ४। वस्तुसविशुशिवभानुजा  
 असुचंप्रवतसंपूर्णमानि। उजराजकानदनोसुमं  
 छि। इतनाविराजहेइहमसिद्धि।  
 रिकेपवित्र। दिनसाजस्तानहे। जोगसिवा। असरेतसा  
 नकोजोस्तान। वाकोअजोगजानोसुजान। ससिराज  
 नसीतजोनिसाहोइ। निसकोरेस्ताननहियोसकोइ। पु  
 तिराजदरसाप्रनित्रहोइ। इहकहीवातसममाजतो  
 इ। इ। वसुदेवमस्तगणजानिलेव। यिकादशसदनस  
 हितदेव। असमानआदिसवदेवचीन। इहसर्वधंइसे  
 होतलीन। धातेडुस्तानकरियेमहान। असस्तानदान  
 जवप्रवतमानि। इनकोअनंतफलहोतकीर। जवप्र  
 स्वसंमैमेकरतधीर। सुनिओरअभ्यथाकजतोइ। को  
 भरातिआसुरीसंमैहोइ। तासोजकजंसववराजनीक  
 इहकहीसुधर्मवक्तसुठीक। संक्रातिसंमैपुनिजगपवा ४

वक्रोऽकरतयलोचितकियोचाहा असमहनसमेमे  
 मुनेवीरा॥ तिसमधदानकरियेसधीराइहसमुमिले  
 ऊनिजचितमाहि॥ भानित्रकार्जमेकरऊनाहि॥ ७॥ पु  
 निमहनसमे असव्याहकाजा असपत्रजनमवामरन  
 साजा॥ नमितिककसूखानजोग्प॥ तिसिमाकदानक  
 र्णोसनेोग्प॥ जानोपवित्रयेप्रंचलाना॥ इमकधाऊ  
 वाजगवधिवाना॥ अगनीसनातवासणीलाना॥ ब्राह्मी  
 सनातवायववधानि॥ असदीव्यस्तनइहप्रंचहोइ॥ अ  
 वकऊसखसममाउतोइ॥ आगनलानकोइहप्रसा  
 जोकरेनस्मसोदिव्यअंगा॥ आपोहिद्याइहमंत्रजानि  
 योतेजुकरेब्राह्मीसुमानि॥ जोकरेस्तानगोरजइवेस  
 वायवस्तानजानूहमेस॥ पुनिसंमेसाकिविनसंमेहोइ  
 सूरजप्रकासजगलेतजोइ॥ जाववतघटामेहकीन  
 मानि॥ विनवद्वलवरयाहोतआनि॥ वामेजोस्तानजोक  
 रेकोइवहदिव्यस्तानतानामहोइ॥ ॥ इतिश्रीपारसु  
 रधर्मसाधेधर्मचंद्रोदयभासाछन्दवंदएकादशम  
 दूषसमाप्ता ११॥ छन्दवेधरी॥ षटोसपनजो लवेको  
 इ रेनअंतकोसमदूहोइ मेधुनकस्योहोइचितवाह



०  
 दुःखार्थकरवावेजाइ ॥ मृतकधुवाजिहिला  
 यताकामकोपस्योप्रशंग ॥ पुनिप्रवित्रताचोहेकोइ  
 नकियेपुनिमुद्दीहोइ ॥ जोअज्ञानपतैतैचीननि  
 त्रनक्षकरलीन ॥ करैकदचितमदिगपान  
 कारकरिजान ॥ इजिनेआदिलेरितिहवर्न  
 चोहेफिरकर्त ॥ श्रीअसमुद्रसुतोसर्वकोइ करनीमन  
 हीसुद्धताहोइ ॥ ताकीसुनोसुभगइहरीत ॥ प्राजापतिव  
 तकरैसप्रीत ॥ प्रामेस्वरकोकरिकैआन ॥ पंचगव्यको  
 करियेपान ॥ तवहीसुद्धताप्रापति होइ ॥ यामेसंकतआ  
 वोकोइ ॥ २ ॥ जलमेडुविफेरिमहिजाइ ॥ अनसामन  
 वतलियोसुचाइ ॥ धारणकिये होइसंभास ॥ फेरप्राण  
 कीवदगईआस ॥ तोफिरकसेसुद्दीहोइ ॥ याकीतरऊ  
 वतावोमोहि ॥ दोइप्रजापतिवतकराइ ॥ तीरथस्नानक  
 रैचिजचाइ ॥ पारणसमदानकरसोइ ॥ तववरननकीसु  
 द्दीहोइ ॥ अवविप्रनकीकरिऊवात ॥ वनमेतथाचोहठे  
 जात ॥ सिधाजुक्तमुंडनकरवाइ ॥ तीनप्रजापतिवत्त  
 कराइ ॥ ३ ॥ दोइगउकोदानकराइ ॥ तवहीसुद्धताहेम  
 तिवान ॥ योस्वायंभूमनिकोवेन ॥ उनपापनिजेसुनिये

एत  
 ४६

श्रेयस रहित होत जानो सबको श्रुतिप्रदतामै प्राप्ति  
ति होश ॥ १० ॥ गौसालांमै लिजेवीना सालाकंद होइ प्र  
वीन तिल इक्षुके जंत्र नजीकाः अनालोव सुधपने ज  
ठीकाः नृपकुल औरतियन के माहि सुद्ध सुधल म  
न हेनाहि धारवेदको वक्ता होइ हस्मा विप्रवताइको  
श्रुतिप्रथवा गुरुतया करिसंगा ताको सुनो अवेका  
ठग इतको आदि धारये दोसा उलति होइ गया विन  
होसा इतको प्राचित कसे होइ इह अवनुम समुगाव  
ऊतोश ॥ ११ ॥ जासो कर्मइसो वरा आश्रुत पान हीसा  
गकराइ उसकृत कर्म करत मै हाराः असे मन मै करे  
विचार महाहठनको करत होशः असे वसुधातकी जो  
श्रुति सो दरवाजे मथेरायिः असे कही जगनिक विनाधि  
गोकुल ओगौसाला माहि नाम नगजइ जानो गाहि  
औरत पोटत तीरथ माहि नदी सुकरना होइ प्रसीदि  
सर्व तीर्थ है जिनके माहि विचरतथको लेऊ मन शानि  
पारावार तीरफी हिलाइः असे मुनिन कही समुगाइ  
सजो जिनवो डो जिय जानिः सो जो जिन लंबो परवान  
रामचंद्र किअप्राप्राइ नल ऊसेत करी चितचाइइ

॥२॥ वासुदेवकीसेतकोजोकोउदसरनपाहि। उ  
 जहसाकेपापसवद्विभमेजातविनाश॥७॥ ॥१॥  
 ॥१॥ जबब्रह्मघातमेसुद्धहोइ। जबकरैज्ञानमहोदधि  
 सुजोइ। उजहसाभूपतेवनिआइ। असमेधजगता  
 सकाइ। केहिगअवसिष्ठतस्तानकीनवहब्रह्म  
 घातकीसुनीप्रवीन। पातकसुभूपकोइहोइ। अव  
 ओरकजसममाइतोइ। फेरिनिजसकोनमेआनभ  
 प। वसिवानिमतचित्तकियेवृष। उदिगउभसभअस  
 जोजदान। करिवाइविपतिनसहितमानि। उनपुत्र  
 लदासिनसमेत। उजदेवभोजवलि कियेहेत। वजदे  
 इवेदवक्तामहान। सतगउंकरवेउनेदान। उजएज  
 करैकिरयासुभूरी। उजहसाहेतसुधतवजह्मवेहा।  
 सतजगमेमुनिकोकघोषधर्मप्रवृत्तसुहोइ। त्रेतामेगोत  
 मसुमुनिधर्मउच्चारनसोइ। संखलिखतदाधरोमही  
 धर्मयापनाठानि। प्राणसकहिप्रीतसोकैवलकलिज  
 गमानि॥२॥ यापारासुरगंधमेहोक्कचतुसत्तजानि  
 असअठवनकरिसुजतधर्मसमूहवधानि॥२॥ ॥१॥  
 न्द्वैवरी॥ धर्मसाहजयेयाजगमाविताकोउजअ

सचित्तवाहा धारण करे प्रीतसौ कोश सर्वकामना प्रा  
 पति होश प्राभेने कना हि संदेस पाराशुरकी अभाये  
 ह ॥ दोहा ॥ जोको उग्रान्त्यको प्रदे सुने चित्तवाहा ॥ ज्ञा  
 नरके इकपल कसे पाप प्रले हो जाश ॥ १२ ॥ संवत नव  
 दशजातिथे ॥ अष्टदश पहिवाति ॥ पोषमासकी त्रय  
 दशी ॥ उवार मनमानि ॥ १३ ॥ शुक्लपक्ष शुभपक्षिमे  
 अंत्य समाप्तकीना ॥ मोक्षनको सुख करन है जे जग  
 परम प्रवीना ॥ १४ ॥ इति श्री पाराशुरे धर्मसास्त्रे धर्मचं  
 द्रेद्यनासा खन्दवन्द द्वादशमध्याय समाप्ता ॥ १२ ॥  
 लिप्यक्तं छोटी लाल जो सी ॥ प्राणी सा प्रपराको आ  
 त्मपठि नार्थ धाना इजी श्री ॥ १० ॥ जुवानी रामजी  
 सीती आया उमासे सुने शुक्लपक्षे ॥ अष्टम्यां मंद  
 वासरो ॥ सवत् अष्टचत्वारिंशदधिके को नविंशतिस  
 तसंख्या कवे ॥ द्वादशपुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखतं मया  
 यदि शुद्धमसुंक्ष्मं ॥ समदोशो नदीयते १ ॥ शुभमभूत्प्रा